



INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAS

RAJASTHAN PUBLIC SERVICE
COMMISSION

प्रारंभिक + मुख्य परीक्षा हेतु

भाग - 2

भारत + विश्व का इतिहास और कला एवं संस्कृति

प्रस्तावना

प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स “**RAS (Rajasthan Administrative Service) (प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु)**” को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है। ये नोट्स पाठकों को राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC) द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा “**Rajasthan State and Subordinate Services Combined Competitive Exams**” भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे।

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है। अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

बयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : <http://www.infusionnotes.com>

Whatsapp Link- <https://wa.link/uwc5lp>

Online Order Link- <https://bit.ly/3X6MGue>

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम्

क्र.सं.	अध्याय	पेज नं.
1	<p style="text-align: center;">प्राचीन भारत का इतिहास</p> <p>भारत के सांस्कृतिक आधार</p> <ul style="list-style-type: none"> • सिन्धु सभ्यता एवं वैदिक काल <ul style="list-style-type: none"> ◦ महत्वपूर्ण स्थलों की विशेषताएं ◦ सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक वीवन • छठी शताब्दी ई. पू. की श्रमण परम्परा • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न 	1
2	<p>प्राचीन एवं मध्यकालीन भारत के धार्मिक आंदोलन और धर्म दर्शन</p> <ul style="list-style-type: none"> • नये धार्मिक विचार- <ul style="list-style-type: none"> ◦ आवीक धर्म, बौद्ध धर्म, लैंज धर्म, शैव धर्म, वैष्णव धर्म, शंकराचार्य, शामानंद, कबीरदास जी, संत रविदास जी, गुरुनानक जी, चत्तन्य महाप्रभु जी, नामदेव जी • धर्म दर्शन – <ul style="list-style-type: none"> ◦ चार्वाक दर्शन ◦ सांख्य दर्शन ◦ योग दर्शन ◦ न्याय दर्शन ◦ वैशेषिक दर्शन ◦ मीमांसा दर्शन ◦ वेदान्त • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न 	13

3	<p>प्रमुख शब्दों के महत्वपूर्ण शासकों की उपलब्धियाँ</p> <ul style="list-style-type: none"> • मार्य, कुषाण, सातवाहन, गुप्त, चालुक्य, पल्लव एवं चोल • उपर्युक्त शब्दों का राजनीतिक, धार्मिक, एवं सांस्कृतिक वीवन • परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न 	29
4	<p>प्राचीन भारत में कला एवं वास्तु</p> <ul style="list-style-type: none"> • सिन्धु घाटी सभ्यता से ब्रिटिश काल तक की कलाएं <ul style="list-style-type: none"> ◦ वास्तु कला ◦ ललित कला ◦ प्रदर्शन कला • परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न 	55
5	<p>प्राचीन भारत में भाषा एवं साहित्य का विकास</p> <ul style="list-style-type: none"> • संस्कृत, प्राकृत एवं तमिल • प्रमुख साहित्यिक रचनायें • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न 	82
मध्यकालीन भारत		
1	<p>अरब आक्रमण</p> <ul style="list-style-type: none"> • मोहम्मद बिन कासिम • महमूद गजनवी • मोहम्मद गाँरी • परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न 	97

2	सल्तनतकाल <ul style="list-style-type: none"> • प्रमुख सल्तनत शासकों की उपलब्धियाँ • विजयनगर की सांस्कृतिक उपलब्धियाँ • परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न 	100
3	मुगलकाल <ul style="list-style-type: none"> • राजनीतिक चुनाँतियाँ एवं सुलह-अफगान, राजपूत, दक्खनी राज्य आँर मराठा • परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न 	114
4	मध्यकाल में कला एवं वास्तु <ul style="list-style-type: none"> • चित्रकला एवं संगीत का विकास • परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न 	119
5	भक्ति तथा सूफी आंदोलन <ul style="list-style-type: none"> • धार्मिक एवं साहित्यिक योगदान • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न 	127
	आधुनिक भारत का इतिहास (प्रारंभिक १९वीं शताब्दी से १९६५ तक)	
1	आधुनिक भारत का विकास <ul style="list-style-type: none"> • यूरोपीय कम्पनियों का आगमन 	132

	<ul style="list-style-type: none"> • मुगल साम्राज्य का पतन • मराठा साम्राज्य • गवर्नर, गवर्नर लनरल & वायसराय एवं उनके कार्य • परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न 	
2	राष्ट्रवाद का उदय <ul style="list-style-type: none"> • 1857 की क्रांति से पूर्व के विद्रोह • 1857 की क्रांति • बाँट्ठिक लागरण; प्रेस; पश्चिमी शिक्षा। • 19वीं तथा 20वीं शताब्दी के दौरान सामाजिक -धार्मिक सुधार आनंदोलन : विभिन्न नेता एवं संस्थाएँ • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न 	153
3	स्वतंत्रता संघर्ष एवं भारतीय राष्ट्रीय आनंदोलन <ul style="list-style-type: none"> • महत्वपूर्ण घटना क्रम, व्यक्तित्व और मुद्दे • विभिन्न चरण एवं धाराएँ, • महत्वपूर्ण योगदानकर्ता एवं देश के अलग-अलग हिस्सों का योगदान • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न 	176
4	स्वातंत्र्योत्तर राष्ट्र निर्माण और पुनर्गठन <ul style="list-style-type: none"> • देशी रियासतों का विलय • राष्यों का भाषायी पुनर्गठन • नेहरू युग में सांस्थानिक निर्माण, विज्ञान एवं तकनीकी का विकास • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न 	222
आधुनिक विद्या का इतिहास		

1	पुनर्जगरण व धर्म सुधार	237
2	अमेरिका में स्वतंत्रता संग्राम, फ्रांसीसी क्रांति (1789 ईस्वी) व आँदोगिक क्रांति	262
3	एशिया व अफ्रीका में साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद	288
4	विश्व युद्धों का प्रभाव	306

प्राचीन भारत का इतिहास

अध्याय - 1

भारत के सांस्कृतिक आधार

सिन्धु घाटी सभ्यता

इतिहास का अध्ययन :-

इतिहास का अध्ययन करने के लिए इसको तीन भागों में विभाजित किया जाता है -

1. प्रार्गतिहासिक काल

2. आद्य ऐतिहासिक काल

3. ऐतिहासिक काल

1. प्रार्गतिहासिक काल -

- वह काल जिसमें कोई भी लिखित स्रोत नहीं मिला अर्थात् सभ्यता और संस्कृति का वह युग जिसमें मानव की उत्पत्ति मानी जाती है।

2. आद्य ऐतिहासिक काल -

- आद्य ऐतिहासिक काल वह काल होता है जिसके लिखित स्रोत मिले लेकिन उसको पढ़ा नहीं जा सका जैसे -

सिन्धु घाटी सभ्यता उसमें जो भाषा भी उसको आज तक पढ़ा नहीं गया है इसलिए इस सभ्यता को आद्य ऐतिहासिक काल की श्रेणी में स्थित है।

- इस काल की लिपि को सर्पिलाकार लिपि कहते हैं क्योंकि सिन्धु घाटी सभ्यता की लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती थी।

- इसी प्रकार ईरान और इराक की मेसोपोटामिया की सभ्यता इसी काल की है।

- शब्दस्थान में इस काल की सभ्यता में कालीबंगा की सभ्यता देखने को मिलती है अर्थात् कालीबंगा की सभ्यता इसी काल की सभ्यता है।

3. ऐतिहासिक काल

ऐतिहासिक काल वह काल होता है जिसमें लिखित स्रोत मिले और उनको पढ़ा भी जा सका जैसे वैदिक काल जिसमें वेदों की रचना हुई थी। और उनको पढ़ा भी जा सकता है।

सिन्धु घाटी सभ्यता

- यह दक्षिण एशिया की प्रथम नगरीय सभ्यता थी।
- इस सभ्यता को सबसे पहले हड्पा सभ्यता नाम दिया गया क्योंकि सबसे पहले 1921 में हड्पा नामक स्थल की खोज दयाराम साहनी द्वारा की गई थी।

इस सभ्यता को निम्न अन्य नामों से भी जाना जाता है-

- संधर्व सभ्यता- जॉन मार्शल के द्वारा कहा गया
- सिन्धु सभ्यता - मार्टियर व्हीलर के द्वारा कहा गया
- वृहतर सिन्धु सभ्यता - ए. आर-मुगल के द्वारा कहा गया

- प्रथम नगरीय क्रांति- गार्डन चाइल्ड के द्वारा कहा गया
- सरस्वती सभ्यता के द्वारा कहा गया
- मेलूहा सभ्यता के द्वारा कहा गया
- कांस्यकालीन सभ्यता के द्वारा कहा गया
- यह सभ्यता मिश्र एवं मेसोपोटामिया सभ्यताओं के समकालीन थी।
- इस सभ्यता का सर्वाधिक फैलाव घग्घर हाकरा नदी के किनारे है। अतः इसे सिन्धु सरस्वती सभ्यता भी कहते हैं।
- 1902 में लॉर्ड कर्बन ने जॉन मार्शल को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग का महानिदेशक बनाया।
- जॉन मार्शल को हड्पा व मोहनबोद्धों की खुदाई का प्रभार सौंपा गया।
- 1921 में जॉन मार्शल के निर्देशन पर दयाराम साहनी ने हड्पा की खोज की।
- 1922 में राखलदास बनर्जी ने मोहनबोद्धों की खोज की।
- सिन्धु सभ्यता की प्रवातियाँ -**
- प्रोटो-आस्ट्रेलायड - सबसे पहले आयी
- भूमध्यसागरीय - मोहनबोद्धों की कुल जनसंख्या में सर्वाधिक है।
- मंगोलियन - मोहनबोद्धों से प्राप्त पुलारी की मूर्ति इसी प्रवाति की है।
- सिन्धु सभ्यता की तिथि**

कार्बन 14 (C^{14}) - 2500 से 1750 ई.पू.

ह्वीलर - 2500-1700 ई.पू.

मार्शल - 3250-2750 ई.पू.

सभ्यता का विनाश

मार्शल

मैंके नदी में बाढ़ के कारण

एस.आर.राव

गार्डन चाइल्ड

व्हीलर बाहु आक्रमण

पिगट

बलवायु परिवर्तन आरेल स्टाइन

अमला नन्द घोष

प्राकृतिक आपदा - केन्यू आर. कनेडी

इस सभ्यता का विस्तार-

- इस सभ्यता का विस्तार पाकिस्तान और भारत में ही मिलता है।

پاکستان میں سیندھ سبھتہ کے س्थل

- سوکانگڈوڑ
- سوتکاکوہ
- بلالاکوٹ
- ڈاکر کوٹ
- **سوکانگڈوڑ**- اس سبھتہ کا سب سے پشیمی س्थل ہے جو داک ندی کے کینارے واقعیت ہے۔ اسکی خوب آرےل ستھن نے کی تھی۔
- سوکانگڈوڑ کو ہڈپا کے تھاپار کا چوڑا بھی کہتے ہیں
مہنبوڈھوڑ
چنہوڑ
کوٹدیبی
آمری
الیمۇرەد
- ہڈپا
ڈرائیسماہل خاؤ
راہمنا ٹری
گوملا
جلیلپور

بھارت میں سیندھ سبھتہ کے س्थل

- **ہریانہ**- رکھیگڑی، سیسول کوئال، بناوالی، میتاول، بآل
- **پنجاب** - کوٹلائیہنگ خان چک 86 بادا، سندھل، ٹر مالرا روپی (سوننگار) - سکتھتہ پ्रاپتی کے باڈ خوبھا گیا پھلہ سبھل
- **کشمیر** - مانڈا
چناب ندی کے کینارے سبھتہ کا عصری سبھل
- **راجस्थान** - کالیبंگا، بلالاٹھل ترخان گالا ڈر
- **उत्तर پ्रदेश** - آلمانگیرپور - سبھتہ کا پوری سبھل
 - مانڈی
 - بیگانہ

- ہلاس
- سناولی

ગुજرات

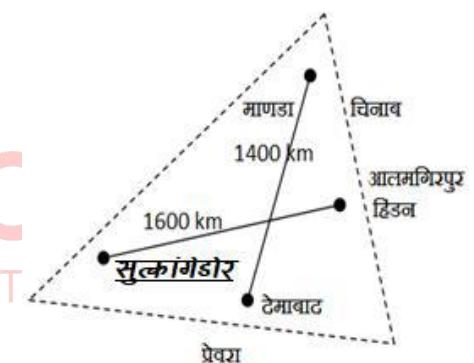
- **ধাঁলাবીરા**, سرકોટડા, દેસલપુર રંગપુર, લોથલ, રોન્ડિખ્વી તેલોદ, નગવાડા, કુન્તાસી, શિકારપુર, જાગેશ્વર, મેઘમ પ્રભાસપાટન ભોગજાર
- **મહારાષ્ટ્ર**- દેમાબાદ
સભ્યતા કી દક્ષિણતમ સીમા
ફેલાવ- ત્રિભુલાકાર
ક્ષેત્રફળ- 1299600 વર્ગ કિલોમીટર

ઉત્તર

પશ્ચિમ

પૂર્વ

દક્ષિણ



સથલ	નદીઓ કે નામ	ઉત્ખન કા વર્ષ	ઉત્ખનકર્તા	વર્તમાન સ્થિતિ
ہڈپا	રાવી	1921	દયારામ સાહની ઔર માધવસ્વરૂપ વત્સ	પશ્ચિમી પંજાਬ કા સાહિવાલ જિલા (પાકિસ્તાન)
મોહનબોડ્ડો	સિન્ધુ	1922	રાખલદાસ બનાઈ	સિન્ધુ પ્રાંત કા લરકાના જિલા (પાકિસ્તાન)
કાલીબંગા	ધરધર	1961	બી. બી. લાલ ઔર બી. કે. થાપર	રાજસ્થાન કા હનુમાનગढ જિલા (ભારત)
કોટદીબી	સિન્ધુ	1955	ફલલ અહમદ	સિન્ધુ પ્રાંત કા ખેંચપુર (પાકિસ્તાન)
રંગપુર	ભાદર	1953-54	રંગનાથ રાવ	ગુજરાત કા કાઠિયાવાડ ક્ષેત્ર (ભારત)
રોપડ	સતલજ	1953-56	યજનદત્ત શર્મા	પંજાબ કા રોપડ જિલા (ભારત)
લોથલ	ભોગવા	1955 તથા 1962	રંગનાથ રાવ	ગુજરાત કા અહમદાબાદ જિલા (ભારત)
આલમગીરપુર	હિંન	1958	યજનદત્ત શર્મા	ઉત્તર પ્રદેશ કા મેરઠ જિલા- (ભારત)
બનાવલી	રંગોડ્	1974	રવિન્દ્ર નાથ : વિષ્ટ	હરિયાણા કા ફટેહાબાદ જિલા (ભારત)
ধાઁલાબીરા	મનહાર એવં મદસાર	1990-91	રવિન્દ્ર નાથ વિષ્ટ	ગુજરાત કા કચ્છ જિલા (ભારત)

- अभी तक सिन्धु सभ्यता के 2800 से अधिक स्थलों की खोज हो चुकी है।
- **सिन्धु सभ्यता के 7 नगर**
- हड्पा
- बनावली
- मोहनलोदड़ों
- द्यौलावीरा
- चन्हूदड़ों
- लोथल
- कालीबंगा

महत्वपूर्ण स्थलों की विशेषताएं

- **हड्पा**
राजी नदी के किनारे पर स्थित इस स्थल की खोज दयाराम साहनी ने की थी।
खोज- वर्ष 1921 में
उत्खनन-
 - i. 1921-24 व 1924-25 में साहनी द्वारा।
 - ii. 1926-27 से 1933-34 तक माधव स्वरूप वत्स द्वारा
 - iii. 1996 में मार्टियर हीलर द्वारा
- हड्पा 5 किमी. की परिधि में फैला हुआ था जो प्रशासनिक नगर लेंसा प्रतीत होता है।
- इसे 'तोरण द्वार का नगर तथा 'अर्द्ध औद्योगिक नगर' कहा जाता है।
- पिगट ने हड्पा एवं मोहनलोदड़ों को इस सभ्यता की लुड्गा राजधानी कहा है। इन दोनों के बीच की दूरी 640 किलोमीटर है।
- 1826 में चार्ल्स मैसन ने यहाँ के एक टीले का उल्लेख किया, बाद में उसका नाम हीलर ने MOUND-AB दिया।
- हड्पा के अन्य टीले का नाम MOUND-F है।
- हड्पा से प्राप्त कब्रिस्तान को R-37 नाम दिया।
- यहाँ से प्राप्त समाधि को HR नाम दिया।
- हड्पा एवं मोहनलोदड़ों में पूर्व व पश्चिम में दो टीले मिलते हैं।
पूर्वी टीले पर नगर पश्चिमी टीले पर-दुर्ग
- हड्पा के अवशेषों में दुर्ग, रक्षा प्राचीन निवासगृह चबूतरा, अज्ञागार तथा ताम्बे की मानव आकृति महत्वपूर्ण हैं।

प्रश्न-हड्पा सभ्यता की उत्पत्ति के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौनसा बोड़ा सही नहीं है?

- A. ई. वे. एच. मैके - सुमेर से लोगों का पलायन
 - B. मार्टियर हीलर - पश्चिमी एशिया से सभ्यता के विचार का प्रवर्सन
 - C. अमलानंद घोष - हड्पा सभ्यता का उद्भव पूर्व हड्पा सभ्यता की परिपक्वता से हुआ
 - D. एम.आर. रफीक. मुगल- हड्पा सभ्यता ने मेसोपोटामिया सभ्यता से प्रेरणा ली।
- उत्तर - D**

मोहनलोदड़ों

- सिन्धु नदी के तट पर मोहनलोदड़ों की खोज सन् 1922 में राखलदास बनर्जी ने की थी।
- **उत्खनन - राखलदास बनर्जी (1922-27)**
 - मार्शल
 - वे.एच. मैके
 - वे.एफ. डेन्स
- हड्पा सभ्यता का प्रसिद्ध पुगस्थल मोहनलोदड़ों देखने में आध्यात्मिक नगर लेंसा प्रतीत होता है।
- मोहनलोदड़ों का नगर **कच्ची ईंटों** के चबूतरे पर निर्मित था।
- मोहनलोदड़ों सिन्धी भाषा का शब्द, अर्थ- मृतकों का टीला
- मोहनलोदड़ों को स्तूपों का शहर भी कहा जाता है।
- बताया जाता है कि यह शहर बाढ़ के कारण सात बार उलझा एवं बसा।
- यहाँ से यूनीकॉर्न प्रतीक वाले चाँदी के दो स्मिक्के मिले हैं।
- **वस्त्र निर्माण** का प्राचीन साक्ष्य यहाँ से मिलता है। कपास के प्रमाण - मेहरगढ़
- सुमेरियन नाव वाली मुहर यहाँ से मिली है।
- मोहनलोदड़ों की सबसे बड़ी इमारत संरचना यहाँ से प्राप्त अज्ञागार है। (राजकीय भण्डारागार)
- यहाँ से एक **20 खण्डों वाला सभाभवन** मिला है। मैके ने इसे 'बाबार' कहा है।
- बहुमंजिली इमारतों के साक्ष्य, पुरोहित आगास, पुरोहितों का विद्यालय, पुरोहित राजा की मूर्ति, कुम्भकारों की बस्ती के प्रमाण भी मोहनलोदड़ों से मिले हैं।
- बड़ी संख्या में **कुओं** की प्राप्ति।
- 8 कक्षों वाला विशाल स्नानागार यहाँ से प्राप्त हुआ है। इसे मार्शल ने आश्वर्यवनक निर्माण कहा।

कालीबंगा-

- खोज अमलानंद घोष द्वारा गंगानगर में
- सर्वप्रती नदी (वर्तमान घग्घर के तट पर)
- कालीबंगा वर्तमान में हजुमानगढ़ में है।
- **उत्खनन - बी.बी लाल 1953 में**
वी. के. थापड़
- कालीबंगा - काले रंग की चूड़ियाँ
- कालीबंगा - संधिव सभ्यता की तीसरी राजधानी है।
- एक साथ दो फसलों की बुवाई तथा लालीदार लुताई के साक्ष्य मिले हैं।
- यहाँ से प्राप्त दुर्ग दो भागों में बंटा हुआ द्विभागीकरण है।
- सङ्क्रान्ति को पक्का बनाने का प्रमाण कालीबंगा से प्राप्त हुआ है।
- युग्म शब्दाधान का साक्ष्य शब्दों का अन्तिम संस्कार की तीनों विधियों के साक्ष्य यहाँ से प्राप्त हुए हैं।
- भूकम्प आने के प्राचीनतम प्रमाण यहाँ से प्राप्त हुए हैं।
- वृषभ की ताम्रमूर्ति भी कालीबंगा से प्राप्त हुई है।
- यहाँ से प्राप्त लेखयुक्त बर्तन से स्पष्ट होता है कि इस सभ्यता की लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती थी।

- "सैंथवासी शाकाहारी तथा माँसाहारी दोनों प्रकार के भोजन का सेवन करते थे।
- गेहूँ, बाँ, चावल, तिल, सरसों, दालें आदि प्रमुख खाद्य फसल थीं।
- सैंथवासी भेड़, बकरी, सूअर, मुर्गी तथा मछलियों का भी सेवन करते थे।
- शाक-सब्जियाँ, दूध तथा अनेक फल जैसे खरबूजा, तरबूज, नारियल, नीबू इत्यादि से ये लोग संभवतः परिचित थे।
- खुदाई से मृदभांडों के अलावा घड़े, तश्तरियाँ, थालियाँ, कटोरे, गिलास, चम्मच आदि बर्तन मिले हैं।

सिन्धु-सभ्यता के प्रमुख बन्दरगाह -

लोथल	-	साबरमती + भोगवा
प्रभासपाटन	-	हिरण्य नदी
मेघम	-	नर्मदा
भगतराव	-	किम
सुकांगेडोर	-	दाशक
सुरकोटदा	-	शादी काँर

सामाजिक जीवन -

- यहाँ पर परिवार मातृसतात्मक होते थे
- वर्ग - विद्वान्, योद्धा, व्यापारी, शिल्पकार श्रमिक
- महिलाएं मांग सिन्दूर से भरती थीं।
- **पासा व शंतरंज का खेल प्रसिद्ध था।**
- मोहनबोद्धों से प्राप्त कुछ कक्षों को कुम्हारों की बस्ती माना जाता है।

धर्म व धार्मिक विधास

- मंदिर व समाधि जैसे अवशेष नहीं मिले
- मोहनबोद्धों से स्त्री की मूर्ति प्राप्त - पृथ्वी देवी - मार्शल
- **मोहनबोद्धों से पदमासन की अवस्था में योगी का चित्र प्राप्त हुआ है।**
- लोथल तथा कालीबंगा से अग्निकुण्ड अथवा यज्ञीय वेदियों के साक्ष्य मिले हैं।

कला एवं स्थापत्य

- धातु से बनी एक जर्टकी की मूर्ति मोहनबोद्धों से प्राप्त हुई है।
- मुहरें सेलखड़ी की बनी होती थी।
- लिपि दाई से बाई ओर लिखी जाती थी (बूस्ट्रोफेडन पद्धति) माप ताँल प्रणाली विचर (Binary system)
1, 24, 8, 16, 32, 64, 160,
- **दशमलव पद्धति उपयोग में थी।**
- बाट के रूप में 16 अथवा उनके आवन्तकों का व्यवहार होता था।

हड्पा सभ्यता या सैंथव सभ्यता का पतन

(Decline of Harappan Civilization or Indus Civilization)

- इस सभ्यता के प्राचीन अवशेषों के अध्ययन से यह पता चलता है कि अपने अंतिम चरण में यह सभ्यता पतनोन्मुख रही।

- अंततः द्वितीय शताब्दी ई.पू. के मध्य इस सभ्यता का पूर्णतः विनाश हो गया।
- इस सभ्यता के विनाश के बारे में विभिन्न विद्वानों ने अपने-अपने मत प्रस्तुत किये हैं

विभिन्न विद्वानों द्वारा सैंथव सभ्यता के पतन संबंधी मत (Opinion of Various Scholars Regarding Fall of Harappan Civilization)

आर्यों का आक्रमण	-----	गार्डन चाइल्ड एवं व्हीलर
पारिस्थितिकी असंतुलन	-----	फेयर सर्विस
नदी मार्ग में परिवर्तन	-----	एम. एस. वृत्स
बाढ़ के कारण	-----	आर. राव, मैके, सर बॉनमार्शल
घग्घर का सूख जाना	-----	डी.पी. अग्रवाल
भूकंप एवं जल प्लावन	-----	राइक्स एवं डेक्स

हड्पा सभ्यता की उत्तरवीकिता और निरंतरता

- दोस्तों, वैसा कि आपको पता है कि नगरीय सभ्यता के उत्कर्ष होने के कारणों के कमज़ोर होने से सभ्यता का विनाश निश्चित रूप से हो जाता है, परंतु उस सभ्यता की सामाजिक व सांस्कृतिक उच्चताओं का अवसान नहीं होता, बल्कि वे नागरिकों के पलायन के साथ और विस्तृत होती जाती हैं।
- आज भी धर्म संबंधी अनेक विशेषताएँ, यथा-बल पूजा, बृक्ष पूजा, शिव तथा शक्ति की पूजा, सूर्य पूजा आदि हमारे धैनिक जीवन में सम्मिलित हैं जो सैंथव सभ्यता की ही देज हैं।
- अतः सभ्यता की समाप्ति के बाद भी उसकी सांस्कृतिक उच्चताएँ निरंतर आने वाली सभ्यताओं में परिलक्षित होती हैं।
- व्यापार, परिवहन, नियोजित नगरीय व्यवस्था तथा शिल्प एवं तकनीक की अनेक विधियाँ जो हड्पावासियों की देज थीं, आज भी प्रचलित हैं।

ताम्रपाषाणकालीन संस्कृतियाँ (Chalcolithic Cultures)

- भारतीय उपमहाद्वीप के विभिन्न भागों में दूसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व तक विभिन्न क्षेत्रीय संस्कृतियों का उदय हुआ।
- ये संस्कृतियाँ न तो शहरी और न ही हड्पा संस्कृति की भाँति थीं, बल्कि पथर एवं तांबे के आँकड़ारों का इस्तेमाल करना इनकी अपनी विशिष्टता थी।
- अतः ये संस्कृतियाँ ताम्रपाषाण संस्कृति के नाम से जानी जाती हैं।
- तकनीकी रूप से ताम्रपाषाण अवस्था हड्पा की काँच्ययुगीन संस्कृति से पहले की है, लेकिन कालक्रमानुसार भारत में हड्पा की काँच्य संस्कृति पहले आती है और अधिकांश ताम्रपाषाणकालीन संस्कृतियाँ बाद में।

8. मत्स्य बनपद

अलवर-भरतपुर जयपुर क्षेत्र
राजधानी विराटनगर

9. सूरसेन

राजधानी मथुरा

10. अवन्ति

- दो भागों में विभाजित
उत्तरी भाग की राजधानी - उच्चेन
दक्षिण भाग की राजधानी - महिष्मती

11. वत्सि

यह आठ राज्यों का एक संघ था।
इसकी राजधानी वैशाली थी।

12. मल्ल दो भाग- कुशीनारा कुशावती पावा

13. गान्धार

- पेशवर व राउलपिण्डी वाला क्षेत्र
- राजधानी तक्षशिला - शिक्षा व व्यापार का प्रमुख केन्द्र

14. कम्बोज

- राजधानी हाटक / राजपुरा

15. अश्मक

- राजधानी पोतन / पोटिल
गोदावरी के तट पर

16. मगथ

- पटना गया शाहबाद वाला क्षेत्र
- राजधानी राजगीर
- वेदों में नाम ब्रात्य
- मगथ का संस्थापक वृहद्ब्रथ
- वास्तविक संस्थापक - बिम्बिसार
दो राजधानियों वाले महाबनपद
- काँशल
- अवन्ति
- पांचाल
- गान्धार व कम्बोज से गुजरने वाला पथ उन्तरापथ
कहलाता था।

“सारांश”

- मानव की उत्पत्ति प्रार्गतिहासिक काल से हुई है।
- कालीबंगा की सभ्यता आद्य ऐतिहासिक काल की है।
इस काल की लिपि को सर्पिलाकार लिपि कहते हैं।
- सिंधु घाटी सभ्यता को सर्वप्रथम हड्पा नाम दिया गया। इसकी खोज 1921 ई. में दयाराम साहनी ने की थी।
- हड्पा सभ्यता को काँशयुगीन सभ्यता भी कहा जाता है। इसका फैलाव रावी नदी के किनारे है।
- 1922 ई. में राखाल दास बनर्जी ने मोहनबोद्धो की खोज की।
- राजस्थान में सिंधु घाटी सभ्यता के स्थल कालीबंगा,
बालाथल, तरखान वाला डेरा हैं।

- हड्पा से दुर्ग, रक्षा प्राचीन, निवासगृह, चबूतरा, अन्नगार तथा तांबे की मानव आकृति के साक्ष्य मिले हैं।
- मोहनबोद्धो से कच्ची ईंटों के चबूतरे, स्तूप, चाँदी के 2 सिक्के, कपास के प्रमाण, कुँए, कक्षों का विशाल स्नानागार, सभा भवन आदि के साक्ष्य मिले हैं।
- कालीबंगा की खोज अमलानंद घोष द्वारा गंगानगर में की गई, लेकिन यह वर्तमान में हनुमानगढ़ में घरगर नदी के तट पर है।
- कालीबंगा का उत्खनन 1953 ई. में बी. बी. लाल तथा वी. के. थापड़ ने किया था।
- कालीबंगा से दो फसलों की बुवाई, पक्की सड़कें, युग्म शबाधान, भूकंप, वृषभ की तास्मूर्ति, लेखयुक्त बर्तन आदि के साक्ष्य मिले हैं।
- चन्द्रदण्डों की खोज N.G. मलूमदार ने तथा उत्खनन मैंके ने किया था यह एक औद्योगिक शहर था।
- लोथल साबरमती व भोगवा नदी के संगम पर स्थित हैं, इसकी खोज R.N. राव ने की। यहां से अग्निवेदी प्राप्त हुई हैं।
- सिंधुवासी शाकाहारी तथा मांसाहारी दोनों थे। यहाँ से गेहूँ लौं, चावल, तेल, सरसों, दाल, आदि फसलों के साक्ष्य मिले हैं।
- भारत में आर्यों की जानकारी ऋग्वेद से मिलती है।
- ऋग्वेद में 10 मंडल, 1028 सूक्त, 10580 श्लोक हैं। यह सबसे प्राचीन वेद है।
- वेद-4, उपनिषद्- 108, पुराण-18 की संख्या में पाए जाते हैं।
- सामवेद संगीत का प्राचीनतम स्रोत है, इसके मंत्र सूर्य देवता को समर्पित हैं।
- पुनर्लंग की अवधारणा सर्वप्रथम ब्रह्मदारण्यक उपनिषद् से आयी।

प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न-1. मोहनलोदड़ो एवं हड्पा की पुरातात्त्विक खुदाई के प्रभारी कौन थे ?

- | | |
|-----------------|--------------------|
| A. लॉर्ड मैकाले | B. सर बॉन मार्शल |
| C. क्लाइव | D. कर्नल लेम्स टॉड |
- उत्तर-B

प्रश्न-2. सिंधु घाटी सभ्यता के किस स्थान की सर्वप्रथम खुदाई की गई?

- | | |
|---------------|-------------|
| A. मोहनलोदड़ो | B. कालीबंगा |
| C. हड्पा | D. लोथल |
- उत्तर-C

प्रश्न-3. वह सील जिस पर एक योगी की आकृति बनी हुई है, जो पशुपति शिव वैसी दिखाई देती है मिली है?

- | | |
|---------------|-------------|
| A. मोहनलोदड़ो | B. हड्पा |
| C. लोथल | D. कालीबंगा |
- उत्तर-A

प्रश्न-4. सर्वप्रथम मानव ने निम्न किस धातु का उपयोग किया?

- | | |
|----------|----------|
| A. सोना | B. चाँदी |
| B. तांबा | D. लोहा |
- उत्तर-C

प्रश्न-5. किस हड्पा स्थल से एक साथ दो फसलें उत्पादन के साक्ष्य मिलते हैं?

- | | |
|-----------|-------------|
| A. हड्पा | B. रोपड़ |
| C. बणावली | D. कालीबंगा |
- उत्तर-D

प्रश्न-6. 'यज्ञ' संबंधी विधि विधानों का पता चलता है?

- | | |
|------------------------|----------------|
| A. ऋग्वेद से | B. सामवेद से |
| C. ब्राह्मण ग्रंथों से | D. यजुर्वेद से |
- उत्तर-D

प्रश्न-7. प्रवापति की पुत्रियों के नाम हैं?

- | | |
|----------------|------------------|
| A. ऊषा व अदिति | B. सभा व समिति |
| C. घोषा व अपला | D. उमा व सरस्वती |
- उत्तर-B

प्रश्न-8. ऋग्वेद में आर्य शब्द किसका वाचक है?

- | | |
|------------|---------|
| A. जाति | B. धर्म |
| C. व्यवसाय | D. गुण |
- उत्तर-D

प्रश्न-9. चारों आश्रमों का उल्लेख किस उपनिषद् में हुआ है?

- | | |
|----------------------|---------------------|
| A. मुण्डकोपनिषद् | B. छान्दोग्योपनिषद् |
| C. वृहदारण्यकोपनिषद् | D. बाबालोपनिषद् |
- उत्तर-D

मुख्य परीक्षा

- भारतीय वैदिक दर्शन की परंपरागत 6 शाखाओं में से किन्हीं चार का नामोल्लेख कीविए।
- भारतीय परंपरा में ऋण की अवधारणा पर प्रकाश डालिए।

अध्याय - 2

प्राचीन एवं मध्य कालीन भारत के धार्मिक आंदोलन और धर्म दर्शन

नये धार्मिक विचार-

आजीवक सम्प्रदाय

- आजीवक या आजीविक सम्प्रदाय दुनिया की प्राचीन दर्शन परम्परा में भारतीय जमीन पर विकसित प्रथम नास्तिकवादी या भाँतिक वादी सम्प्रदाय था।
- इसकी स्थापना मक्खलिपुत्र गौशाल द्वारा की गयी थी।
- ऐसा माना जाता है कि मक्खलिपुत्र गौशाल पहले महावीर के शिष्य थे, किन्तु बाद में मतभेद हो जाने पर उन्होंने महावीर का साथ छोड़ दिया तथा आजीवक नामक स्वतंत्र सम्प्रदाय की स्थापना की।
- आजीवक सम्प्रदाय लगभग 1002 ई. तक बना रहा।
- इनका मत नियतिवाद या भाग्यवाद पर आधारित था। जिसके अनुसार संसार की प्रत्येक वस्तु भाग्य द्वारा पूर्व नियंत्रित एवं संचालित होती है।
- इनके अनुसार मनुष्य के जीवन पर उसके कर्मों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
- महावीर के समान गौशाल भी ईश्वर की सत्ता में विश्वास नहीं करते थे। तथा जीव और पदार्थ को अलग-अलग तत्व मानते थे।
- इस सम्प्रदाय के स्वयं के कोई ग्रंथ या अभिलेख वर्तमान में प्राप्त नहीं हैं।
- इस सम्प्रदाय का उल्लेख तत्कालीन धर्मग्रंथों तथा अशोक के अभिलेखों के आलावा मध्यकाल के स्रोतों तक में मिलता है।
- ऐसा माना जाता है कि आजीवक सम्प्रदाय के अनुयायी (आजीवक भ्रमण) नग्न रहते थे तथा परिवारकों अर्थात् सन्यासियों की भाँति घूमते थे। ईश्वर पुनर्जन्म और कर्म अर्थात् कर्मकाण्ड में इनका विश्वास नहीं था।
- ये जाति व्यवस्था के घोर विरोधी थे और समाजता पर जोर देते थे।
- आजीवक सम्प्रदाय का तत्कालीन जनमानस और राज्यसत्ता पर काफी गहरा प्रभाव था।
- अशोक और उसके पोते दशरथ नए बिहार के लहानाबाद (पुराना "गया", बिला) स्थित बराबर की पहाड़ियों में सात गुफाओं का निर्माण कर उन्हें आजीवकों को समर्पित किया था।

वैंग व बौद्ध धर्म

उदय के कारण →

- छठी शताब्दी ई.पू. में वैदिक संस्कृति कर्मकाण्डों व आडम्बरों से ग्रसित हो गई।
- परिणाम सामाजिक कुरीतियां
- समाज में ऊँच-नीच जात-पात का भेदभाव बढ़ने लगा।
- जनता में असंतोष बढ़ा।

'कृष्ण-कृष्ण' रटने को कहा। तभी से इनका सारा वीवन बदल गया और ये हर समय भगवान् श्रीकृष्ण की भक्ति में लीन रहने लगे। भगवान् श्रीकृष्ण के प्रति इनकी अनन्य जिष्ठा व विश्वास के कारण इनके असंख्य अनुयायी हो गए। सर्वप्रथम नित्यानंद प्रभु व अद्वैताचार्य महाराज इनके शिष्य बने। इन दोनों ने निमाई के भक्ति आंदोलन को तीव्र गति प्रदान की। निमाई ने अपने इन दोनों शिष्यों के सहयोग से ढोलक, मृदंग, झाँड़, मंबीरे आदि वाद्य यंत्र बनाकर व उच्च स्वर में नाच-गाकर 'हरि नाम संकीर्तन' करना प्रारंभ किया।

नामदेव वी

नामदेव का भक्ति आंदोलन में योगदान

बंगाल के ही समान महाराष्ट्र में भी भक्ति आंदोलन का प्रचार हुआ। यहाँ के मध्ययुगीन सुधारकों में नामदेव का नाम उल्लेखनीय है। उनका जन्म 1270 ई. में सतारा ज़िले में कन्हाड के समीप नरसीबमनी गाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम दामाशेट तथा माता का नाम बोनाबाई था। वे छिपी जाति के थे। नामदेव को भक्ति की प्रेरणा अपने पिता से ही मिली थी। उन्होंने अपना बचपन साधुओं की सेवा तथा सत्संग में व्यतीत किया।

संत विमोक्ष खेचर उनके गुरु थे। संत ज्ञानेश्वर के प्रति उनके मन में बड़ा सम्मान था। ज्ञानेश्वर के साथ उन्होंने कई स्थानों का भ्रमण किया तथा साधु-संतों से परिचय प्राप्त किया। उनकी मृत्यु के बाद नामदेव महाराष्ट्र छोड़कर पंजाब के गुरुदासपुर ज़िले में स्थित घोमन नामक गाँव में बाकर बस गये। यहाँ से उन्होंने अपने मत का प्रचार किया। हिन्दू तथा सिख दोनों ही उनके भक्त बन गये। नामदेव भी निरगुणवादी थे। उन्होंने मूर्ति-पूजा तथा धर्म के बाह्यांबरां का विरोध करते हुये प्रेम, भक्ति एवं समाजता का उपदेश दिया। उनका कहना था, कि परमात्मा ही सब कुछ है। उसके अलावा कोई दूसरी सत्ता नहीं है। वहीं सभी में व्याप्त हैं। अतः एकान्त में उसी का ध्यान करना चाहिए। भक्ति को उन्होंने मोक्ष का साधन स्वीकार किया। नामदेव की एक भक्त के स्प में महाराष्ट्र तथा उत्तर भारत में इतनी अधिक प्रतिष्ठा थी, की कबीर ने भी आदरपूर्वक उनका समरण किया है। वे हिन्दू-मुस्लिम एकता के भी समर्थक थे। सभी जातियों के लोगों को उन्होंने अपना अनुयायी बनाया। वे मराठी भाषा तथा साहित्य के प्रमुख कवि थे। मराठी भाषा के माध्यम से उन्होंने महाराष्ट्र की जनता में एक नई चेतना लगाई।

चार्वाक दर्शन (भौतिकवाद)

चार्वाक दर्शन एक प्राचीन भारतीय भौतिकवादी नास्तिक दर्शन है। यह मात्र प्रत्यक्ष प्रमाण को मानता है तथा यह सिद्धांत पारलॉकिक सत्ताओं को स्वीकार नहीं करता है। इसके दर्शन प्रबर्तक चार्वाक ऋषि थे।

इस दर्शन को वेदबाह्य (चार्वाक, माध्यमिक, योगचार, सांत्रान्तिक, वैभाषिक, और आर्हत(जैन) भी कहा जाता है।

चार्वाक सिद्धांतों के लिए बाँधु पिटकों में 'लोकायत' शब्द का प्रयोग किया जाता है, जिसका मतलब 'दर्शन की वह प्रणाली है, जो इस लोक में विश्वास करती है लेकिन स्वर्ग, जरक अथवा मुक्ति की अवधारणा में विश्वास नहीं रखती है। चार्वाक दर्शन के अनुसार पृथ्वी, जल, तेज तथा वायु ये चार ही तत्त्व सृष्टि के मूल कारण हैं। उनके मत में आकाश नामक कोई तत्त्व है ही नहीं।

इस दर्शन में कहा गया है, कि "यावच्चीवेत सुखं जीवेद ऋणं कृत्वा धृतं पिवेत, भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः" अर्थात् जब तक जीवा है, सुख से जीवा चाहिए, अगर अपने पास साधन नहीं हैं, तो दूसरे से उधार लेकर सुख से रहना चाहिए, शमशान में शरीर के ललने के बाद शरीर वापस कहां आता है?

चार्वाक दर्शन के प्रमुख मत-

सुखवाद- सर्वदर्शनसंग्रह में चार्वाक के मतानुसार सुख को ही इस जीवन का मुख्य लक्ष्य बताया गया है।

अनात्मवाद- चार्वाक आत्मा को पृथक् कोई पदार्थ नहीं मानते हैं। उनके अनुसार शरीर ही आत्मा है।

इसकी सिद्धि के तीन प्रकार हैं- तर्क, अनुभव और आयुर्वेद शास्त्र।

तर्क से आत्मा की सिद्धि के लिये चार्वाक लोग कहते हैं कि शरीर के रहने पर चैतन्य रहता है और शरीर के न रहने पर चैतन्य नहीं रहता। इस प्रकार शरीर ही चैतन्य का आधार अर्थात् आत्मा है यह सिद्धि होता है।

अनुभव 'मैं स्थूल हूँ, 'मैं दुर्बल हूँ, 'मैं गोरा हूँ, 'मैं निष्क्रिय हूँ इत्यादि अनुभव हमें पग-पग पर होता है। स्थूलता दुर्बलता इत्यादि शरीर के धर्म हैं और 'मैं भी वही हूँ। अतः शरीर ही आत्मा है।

आयुर्वेद विस प्रकार गुड, जौ, महुआ आदि को मिला देने से काल क्रम के अनुसार उस मिश्रण में मध उत्पन्न होती है, अथवा दही, पीली मिठी और गोबर के परस्पर मिश्रण से उसमें बिच्छू पैदा हो जाता है उसी प्रकार चतुर्भूतों (पृथ्वी, जल, तेज और वायु) के विशिष्ट सम्मिश्रण से चैतन्य (चेतना) उत्पन्न हो जाता है।

धर्म दर्शन

सांख्य दर्शन

भारतीय दर्शन में सांख्य दर्शन प्राचीनतम दर्शन है। इस दर्शन के प्रवर्तक "महर्षि कपिल" हैं। आचार्य गांतम बुद्ध ने भी सांख्य दर्शन का अध्ययन किया। क्योंकि उनके गुरु आलार कलाम सांख्य दर्शन के विद्वान् थे। उन्होंने गांतम बुद्ध को सांख्य का उपदेश दिया। विससे उनके मन में वैराग्य उत्पन्न हुआ और वह घर त्याग कर चले गए।

सांख्य दर्शन मुख्यतः दो (2) तत्वों को मानता है। 1. प्रकृति 2. पुरुष इन दो तत्वों से ही सांख्य दर्शन के अन्य (23) तत्वों की उत्पत्ति होती है। सांख्य में प्रकृति को अचेतन कहा गया है और वही पुरुष को चेतन। वब पुरुष का प्रतिबिंब

(छाया) प्रकृति के ऊपर पड़ता है। तब सृष्टि प्रक्रिया आरंभ होती है। यह सांख्य दर्शन का मत है।

सांख्य दर्शन में तत्त्व

सांख्य दर्शन में 25 तत्त्व हैं। इन तत्त्वों का सम्यक् ज्ञान वीव को जन्म-मरण के बंधन से मुक्त करता है। सांख्य का अर्थ ही है- तत्त्वों का ज्ञान। विससे वीव मुक्ति पा सके। गीता में भी भगवान् श्रीकृष्ण ने सांख्य दर्शन का उपदेश अर्जुन को दिया। सांख्य दर्शन के विभिन्न आचार्य हुए। लेकिन आज के समय में सांख्य दर्शन का बो प्रामाणिक ग्रंथ मिलता है। वह ग्रंथ है- "सांख्य-कारिका"। इसका श्रेय आचार्य ईश्वर कृष्ण को जाता है।

ईश्वर कृष्ण ने अपनी सांख्यकारिका में आचार्य कपिल के सूत्रों (सांख्यसूत्र) को कारिका बद्ध करके पाठकों के लिए सहज और अर्थ दृष्टि से भी सरल बनाया है। सांख्य-कारिका विभिन्न लेखकों, संपादकों द्वारा रचित है। लेकिन डॉ. विमला कर्णाटिका द्वारा लिखित सांख्य-कारिका प्रचलित तथा बोधगम्य है।

सांख्य के 25 तत्त्वों का विवरण -

सांख्य दर्शन में क्रमशः 25 तत्त्व माने गए हैं। पच्चीस तत्त्व हैं- प्रकृति, पुरुष, महत् (बुद्धि), अहंकार, पंच ज्ञानेन्द्रिय (चक्षु, श्रोत, रसना, घ्राण, त्वक्), पंच कर्मेन्द्रिय (वाक्, पाद, पाणि, पायु, उपस्थ), मन, पंच- तंमात्र (स्प, रस, गंध, शब्द, स्पर्श) पंच-महाभूत (पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश)।

सांख्य दर्शन सूत्रबद्ध होने की वजह से पढ़ने में कठिन था। लेकिन उसका कारिकाबद्ध होने से पढ़ने में सुविधा हुई। जब तक सांख्य दर्शन सूत्रों में था, तब तक उसे कुछ विद्वान् ही पढ़ पाते थे। लेकिन सूत्र से कारिका और कारिका से तत्त्व-काँमुदी के विकास ने सांख्य दर्शन को वीवित कर दिया और उसको अनेक विद्वान् व छात्र सहर्ष पढ़ने लगे।

सांख्य दर्शन का प्रमुख सिद्धांत -

सांख्य का मुख्य सिद्धांत सत्कार्याग्रद है। विससे सत् से सत् की उत्पत्ति आदि पांच हेतु माने गए हैं। सांख्य दर्शन ईश्वर को नहीं मानता, इसीलिए इसे निरीश्वरवाद भी कहते हैं। यह दर्शन पुरुष को आत्मा और प्रकृति को माया आदि नामों से पुकारा जाता है।

सांख्य दर्शन का सर्वोत्कृष्ट तत्त्व बुद्धि को माना गया है। विसे हम महत् के नाम से भी जानते हैं। क्योंकि बुद्धि के द्वारा ही हमें सत्य और असत्य का भान होता है। इसीलिए इसे विवेकी भी कहा गया है। सांख्य में बुद्धि के 8 धर्म बताये गए हैं- धर्म, ज्ञान, वैराग्य, ऐश्वर्य, अधर्म, अज्ञान, अवैराग्य एवं अनेकर्थी। बुद्धि के यह 8 धर्म ही मनुष्य को सङ्कृति व अथोगति की ओर ले जाने का कार्य करते हैं।

सांख्य दर्शन शास्त्र में मुक्ति -

सांख्य दर्शन में दो प्रकार की मुक्ति बताई गई है। 1. देह-मुक्ति 2. विदेह-मुक्ति। देह-मुक्ति का तात्पर्य है- शरीर की मुक्ति और विदेह-मुक्ति से तात्पर्य है- जन्म-मरण प्रक्रिया से सदृङ् व के लिए मुक्ति व सूक्ष्म शरीर की मुक्ति।

सांख्य दर्शन को विभिन्न भारतीय दर्शनों में यत्र-तत्र सर्वत्र पढ़ा जा सकता है। श्रुति लेखानुसार- सभी दर्शनों की उत्पत्ति सांख्य दर्शन से मानी गई है। सर्व प्राचीन दर्शन होने का गौरव सांख्य दर्शन को ही प्राप्त है।

योगदर्शन

पतंजलि योगसूत्र का परिचय

योगदर्शन एक बड़ा ही महत्वपूर्ण और साधकों के लिये परम उपयोगी ग्रंथ है। निस प्रकार पूर्व में हमने महर्षि पतंजलि के सम्पूर्ण वीवन परिचय वाली पोस्ट में चर्चा की थी की योगसूत्र ग्रंथ महर्षि पतंजलिकृत सभी ग्रंथों में से एक है। इसमें अन्य दर्शनों की भाँति खण्डन-मण्डन के लिये युक्तिवाद का अवलम्बन न करके सरलतापूर्वक बहुत ही कम शब्दों में अपने सिद्धांत का निस्पाण किया गया है। इस ग्रंथ पर अब तक संस्कृत, हिंदी और अन्यान्य भाषाओं में बहुत भाष्य और टीकाएँ लिखी जा चुकी हैं।

महर्षि पतंजलि ने पातंजलि योगसूत्र ग्रंथ को चार भागों अर्थात् चार अध्यायों में बाँटा है, जिन्हें पाद के नाम से जाना जाता है।

योग दर्शन के चार पाद -

1. समाधिपाद - 51 सूत्र
2. साधनपाद - 55 सूत्र
3. विभूतिपाद - 55 सूत्र
4. कैवल्यपाद - 34 सूत्र

इन चारों पादों का परिचय निम्नलिखित इस प्रकार है-

I. समाधिपाद

योगदर्शन के प्रथम पाद में योग के स्वरूप, लक्षण और योग की प्राप्ति के उपायों का वर्णन करते हुए चित्तवृत्तियों के पाँच भेद के साथ उनके लक्षण बतलाये गये हैं। वहाँ सूत्रकार ने निद्रा को भी चित्त की वृत्तिविशेष के अन्तर्गत माना है अन्य दर्शनकारों की भाँति इनकी मान्यता में निद्रा वृत्तियों का अभावस्प अवस्था विशेष नहीं है। तथा विपर्ययवृत्ति का लक्षण करते समय उसे मिथ्याज्ञान बताया है।

अतः साधारण तौर पर यहीं समझ में आता है कि दूसरे पाद में 'अविद्या' के नाम से विस प्रधान क्लेश का वर्णन किया गया है वह और चित्त की विपर्ययवृत्ति दोनों एक ही हैं; परन्तु गम्भीरता पूर्वक विचार करने पर यह बात ठीक नहीं मालूम होती। ऐसा मानने से लो-लो आपत्तियाँ आती हैं, उनका द्विदर्शन सूत्रों की टीका में कराया गया है दृष्टा और दर्शन की एकतास्प अस्मिता-क्लेश के कारण का नाम 'अविद्या' है वह अस्मिता चित्त की कारण मानी गयी है।)

इस पाद के सत्रहें और अठारहें सूत्रों में समाधि के लक्षणों का वर्णन बहुत ही संक्षेप में किया गया है। उसके बाद इकतालीसवें से लेकर इस पाद की समाप्ति तक समाधि का कुछ विस्तार से फिर से वर्णन किया गया है, परन्तु विषय इतना गम्भीर है कि समाधि की बैसी स्थिति प्राप्त कर लेने के पहले उसका ठीक-ठीक भाव समझ लेना बहुत ही कठिन है।

“सारांश”

- चाणक्य ने अर्थशास्त्र नामक पुस्तक की रचना की।
- पाटलिपुत्र को पालिब्रोथा के नाम से भी जाना जाता था।
- मेगस्थनीय ने इंडिका नामक पुस्तक की रचना की।
- अभिलेखों में अशोक को देवानाम प्रियदर्शी कहा गया है।
- कुषाण वंश का संस्थापक कुलुल कङ्गाफिसेस था।
- चाणक्य के अर्थशास्त्र में सात प्रकार के कर उल्लेखित हैं।
- कुषाण वंश के शासक कनिष्ठ ने 78 ई. में एक संवत् प्रारंभ किया, जिसे शक संवत् कहा जाता है।
- कल्हण द्वारा राजतंत्रंगिणी की रचना की गई।
- भारतीयों के लिए महान सिल्क मार्ग कनिष्ठ ने आरंभ किया था।
- सातवाहन वंश के शासन काल में चावल की खेती होती थी।
- इत्र बनाने और बेचने वाले स्वयं को गंधिको कहने लगे। “गांधी” शब्द की उत्पत्ति इसी हुई है।
- सातवाहनों की शासन प्रणाली एकतांत्रिक थी।
- सातवाहन वंश के शासक शातकर्णी प्रथम ने 'दक्षिणाधिपति' की उपाधि धारण की तथा भूमिदान का पहला अभिलेखीय साक्ष्य भी निर्मित करवाया।
- गुप्त वंश के समय में भारत ‘सोने की चिड़िया’ कहलाता था।
- काव्यालंकार सूत्र में समुद्रगुप्त का नाम 'चंद्रप्रकाश' मिलता है।
- कुमारगुप्त के शासनकाल में ही जालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना हुई थी।
- गुप्त काल में मंदिरों का निर्माण ऊँचे चबूतरे पर किया जाता था, तथा छत सपाट होती थी।
- गुप्त काल की हरिषण लिखित चंपू शैली में गद्य-पद्य को मिथ्रित स्प में लिखा जाता था।
- गुप्तकाल के प्रसिद्ध खगोलशास्त्री द्वारा वराहमिहिर ने वृहत्संहिता तथा पंचासिद्धांतिका ग्रंथों की रचना की।
- गुप्तकालीन गणितज्ञ आर्यभट्ट ने आर्यभट्टीय तथा दशमलव प्रणाली की रचना की।
- वारभट्ट आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्रंथ 'अष्टांगहृदय' की रचना की।
- आयुर्वेदाचार्य एवं चिकित्सक धनवंतरी चंद्रगुप्त विक्रमादित्य के दरबार में था।
- चालुक्य वंश की वास्तविक नींव डालने वाला व्यक्ति पुलकेशिन प्रथम था।
- चालुक्यों का एहोल का विष्णु मंदिर उड़ते हुए देवताओं की सुंदर मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध है।
- महाबलीपुरम के एकाशम मंदिर का निर्माण पलल्व राजा नरसिंह वर्मन प्रथम द्वारा किया गया था।

- द्रविड़ शैली की स्थापना पल्लव नरेशों के शासनकाल में हुई।
- चोल वंश के संस्थापक विलयालय थे, तथा राजधानी तंबाँर थी।
- नटराज शिव की काँस्य प्रतिमा का निर्माण चोल शासकों के शासनकाल में हुआ था।

प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न-1. प्रसिद्ध यूनानी राजदूत मेगस्थनीय भारत में किसके दरबार में आए थे?

- | | |
|---------------------|--------------|
| A. अशोक | B. हर्षवर्धन |
| C. चंद्रगुप्त मौर्य | D. हेमू |

उत्तर-C

प्रश्न-2. चंद्रगुप्त मौर्य ने अपने अंतिम दिन कहाँ गुबारे थे?

- | | |
|-----------------|------------|
| A. श्रवणबेलगोला | B. काशी |
| C. पाटलिपुत्र | D. उब्लैंज |

उत्तर-A

प्रश्न-3. अशोक ने बाँध होते हुए भी हिंदू धर्म में आस्था नहीं छोड़ी, इसका प्रमाण है?

- | | |
|------------------------|---------------------------|
| A. तीर्थयात्रा | B. मोक्ष में विश्वास |
| C. पशु चिकित्सालय खोले | D. 'देवनामप्रिय' की उपाधि |

उत्तर-D

प्रश्न-4. बिबिसार तथा अबातशत्रु के राज्य काल में मगध की राजधानी थी -

- | | |
|-------------|---------------|
| A. काँशांबी | B. श्रावस्ती |
| C. राजगीर | D. पाटलिपुत्र |

उत्तर-C

प्रश्न-5. पतंजलि किस शंग का पुरोहित था?

- | | |
|---------------|---------------|
| A. अग्निमित्र | B. पृष्ठमित्र |
| C. वासुमित्र | D. सुव्येष |

उत्तर-B

प्रश्न-6. लिच्छवी दाँहित्र किसे कहते हैं?

- | | |
|---------------------|----------------|
| A. स्कंदगुप्त | B. कुमारगुप्त |
| C. चंद्रगुप्त प्रथम | D. समुद्रगुप्त |

उत्तर-D

प्रश्न-7. किसके शासनकाल को प्राचीन भारत का स्वर्णिम काल कहते हैं?

- | | |
|---------------|---------------|
| A. गुप्त शासन | B. मौर्य शासन |
| C. मुगल शासन | D. वर्धन शासन |

उत्तर-B

VIII. कांची में स्थित कैलासनाथ मंदिर द्रविड़ स्थापत्य का एक प्रमुख उदाहरण है। यह मंदिर राजसिंह और उसके बेटे महेंद्र ॥। द्वारा बनाया गया है।
वेसर शैली

- I. इस स्थापत्य शैली का प्रादुर्भाव पूर्व मध्यकाल में हुआ।
- II. वस्तुतः यह एक **मिश्रित शैली** है जिसमें नागर और द्रविड़ दोनों शैलियों के लक्षण पाए जाते हैं।
- III. वेसर शैली के उदाहरणों में दक्कन भाग में कल्याणी के परवर्ती चालुक्यों द्वारा तथा होयसालों के द्वारा बनाए गए मंदिर प्रमुख हैं।
- IV. इसमें द्रविड़ शैली के अनुस्प पिमान होते हैं पर ये पिमान एक-दूसरे से द्रविड़ शैली की तुलना में कम दूरी पर होते हैं जिसके फलस्वरूप मंदिर की ऊँचाई कुछ कम रहती है।
- V. वेसर शैली में बाँदू चैत्यों के समान अर्धचंद्राकार संरचना भी देखी जाती है, जैसे - ऐहोल के दुगर्मंदिर में।
- VI. मध्य भारत और दक्कन में स्थान-स्थान पर वेसर शैली में कुछ अंतर भी पाए जाते हैं। उदाहरणस्वरूप, पापनाथ मंदिर और पट्टिकल मंदिर।

खलुराहो मंदिर : नागर शैली के हिन्दू व बैंज मंदिर
 • मध्य प्रदेश में स्थित खलुराहो के मंदिरों का निर्माण चंदेल वंश के शासकों द्वारा 900 से 1130 ई। के मध्य किया गया था। ये मंदिर अपनी नागर स्थापत्य शैली और कामुक मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध हैं। यहाँ के मंदिर हिन्दू व बैंज धर्म से संबंधित हैं और यहाँ का सबसे प्रसिद्ध मंदिर 'कंदारिया महादेव मंदिर' है। खलुराहो के मंदिरों को 1986 ई। में युनेस्को ने 'विश्व विरासत स्थल' का दर्जा प्रदान किया था।

• खलुराहो के मंदिर भारतीय स्थापत्य कला के अद्भुत उदाहरण हैं, जिनका निर्माण तत्कालीन चंदेल वंश के शासकों ने किया था। इन मंदिरों को 'विश्व विरासत स्थल' का दर्जा प्रदान किया जाना इनके कलात्मक महत्व को दर्शाता है।

खलुराहो मंदिर से संबंधित तथ्य :

- I) खलुराहो हिन्दू व बैंज मंदिरों का समूह है, जो मध्य प्रदेश के छतरपुर जिले में स्थित है।
- II) चौसठ योगिनी मंदिर, ब्रह्मा एवं महादेव मंदिर ग्रेनाइट पत्थर से और शेष मंदिर गुलाबी अथवा हल्के पीले रंग के दानेदार बलुआ पत्थर से बने हैं।
- III) खलुराहो मंदिर मध्य भारत की विंध्य पर्वतश्रेणी में स्थित हैं।
- IV) खलुराहो के मंदिरों का निर्माण चंदेल वंश के शासकों द्वारा 900 से 1130 ई। के मध्य किया गया था।
- V) इन मंदिरों को 1986 ई। में युनेस्को ने 'विश्व विरासत स्थल' का दर्जा प्रदान किया था।
- VI) खलुराहो के मंदिरों का निर्माण ग्रेनाइट की नींव, जोकि दिखाई नहीं देती है, पर बलुआ पत्थर से किया गया है।
- VII) ये मंदिर अपनी नागर स्थापत्य शैली और कामुक मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध हैं।

VIII) खलुराहो मंदिरों का संबंध वैष्णव धर्म, शैव धर्म और बैंज धर्म से है।

- IX) ऐसा माना जाता है कि हर चंदेल शासक ने अपने शासनकाल में कम से कम एक मंदिर अवश्य बनवाया था। इसीलिए खलुराहो के मंदिरों का निर्माण किसी एक शासक के काल में नहीं हुआ है। वास्तव में मंदिरों का निर्माण, निर्माण से अधिक चंदेल वंश के शासकों के लिए एक परम्परा बन गई थी।
- X) यशोवर्मन (954 ई।) ने 'विष्णु मंदिर' बनवाया था, जिसे अब 'लक्ष्मण मंदिर' के नाम से जाना जाता है। यह अपने समय का अलंकृत और सुस्पष्ट उदाहरण है, जो चंदेल राजपूतों की प्रतिष्ठा को प्रमाणित करता है।
- XI) स्थानीय परम्परा के अनुसार यहाँ कुल 85 मंदिर थे, लेकिन अब 25 मंदिर ही मौजूद हैं, जो संरक्षण की विभिन्न अवस्थाओं में हैं।
- XII) चंदेल वंश के पतन (1150 ई.) के बाद मुस्लिम आक्रमणकर्ताओं द्वारा इन मंदिरों को काफी क्षति पहुँची और इसी के चलते यहाँ के स्थानीय निवासी खलुराहों को छोड़कर बाहर चले गए।
- XIII) यहाँ का सबसे प्रसिद्ध मंदिर 'कंदारिया महादेव मंदिर' है, जो 6500 वर्ग फीट में फैला हुआ है और इसके शिखर की ऊँचाई 116 फीट है।
- XIV) 13वीं से 18वीं सदी तक खलुराहों के मंदिर बनों से ढके रहे। बनों से ढके होने के कारण बनता की पहुँच से दूर बने रहे, लेकिन ब्रिटिश इंजीनियर टी.एस. बुर्ट ने इन्हें दोबारा खोला और तब से ये मंदिर बनता के लिए आकर्षण का केंद्र बन गए।
- XV) खलुराहों महोबा के 54 कि.मी. दक्षिण, छतरपुर के 45 कि.मी. पूर्व और सतना जिले के 105 कि.मी. पश्चिम में स्थित हैं तथा निकटतम रेलवे स्टेशनों अर्थात् महोबा, सतना और झांसी से पक्की सड़कों से अच्छी तरह जुड़ा है।

प्रश्न - मंदिर स्थापत्य के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सत्य है?

- A. स्वतंत्र आधार (चूना-पत्थर) के मंदिरों का उद्भव गुप्त काल में माना जाता है?
 - B. लाइखाँ, जो कि एक प्रारंभिक मंदिर है, बादामी के चालुक्यों से संबंध है।
 - C. खलुराहो के मंदिरों में मंदिर के समस्त घंड आंतरिक और ब्रह्म स्प से जुड़े हुए हैं।
 - D. काँची का कैलाश नाथ मंदिर द्रविड़ शैली का सबसे प्रारंभिक स्वतंत्र आधार का मंदिर है।
- उत्तर-D

द्रविड़ शैली के मंदिरों की प्रमुख विशेषताएँ एवं उदाहरण

- I. द्रविड़ शैली के मंदिरों का शिखर पिरामिड जुमा होता है, जो ऊपर की ओर आकार में छोटी होती मंजिलों का बना होता है।
- II. इन मंदिरों के पिरामिड का शीर्ष भाग 8 या 6 कोणों के आकार का होता है।
- III. गर्भ ग्रह वृत्ताकार आकृति का बना होता है।
- IV. द्रविड़ शैली के मंदिरों की अन्य विशेषताओं में अनुषंगी भवन, स्तंभ युक्त सभा भवन जिसे मंडप कहा जाता है, एवं लंबी गलियारे आदि इनकी प्रमुख विशेषताएँ हैं।
- V. द्रविड़ शैली के मंदिर दक्षिण भारत में प्रमुख विशेषताएँ हैं।
- VI. द्रविड़ शैली के मंदिरों का निर्माण पत्तब, चालुक्य, चोल शासकों के शासनकाल में हुआ।
- VII. द्रविड़ शैली के मंदिरों के प्रमुख उदाहरण -
 - महाबलीपुरम के मंदिर
 - कांची के मंदिर
 - वातापी तथा एहोल मंदिर
 - तंबूर का राजराजेश्वर मंदिर और बृहदेश्वर मंदिर तथा श्रीरंगम का वैष्णव मंदिर प्रमुख द्रविड़ शैली के मंदिर हैं।

मौर्ययुगीन संस्कृति

- 1) दरबारी अथवा राजकीय कला जिसमें राजतक्षाओं द्वारा निर्मित स्मारक मिलते हैं जैसे राजप्रासाद, स्तम्भ, गुहा विहार, स्तूप आदि।
- 2) लोककला जिसमें स्वतंत्र कलाकारों द्वारा लोकसंघ की वस्तुओं का निर्माण किया गया, जैसे- यक्ष-यक्षिणी प्रतिमायें, मिट्ठी की मूर्तियाँ आदि। अग्रलिखित पंक्तियों में उपर्युक्त दोनों कलाओं का विवरण प्रस्तुत किया जायेगा। दरबारी अथवा राजकीय कला
- मौर्यकाल के अधिकांश अवशेष स्मारक अशोक के समय के हैं। अशोक के पूर्व मौर्ययुगीन वास्तुकला का ज्ञान हमें मुख्यतः यूनानी लेखकों के विवरण से होता है। **कौटिल्य** अपने **अर्थशास्त्र** में दुर्ग विधान के अन्तर्गत वास्तुकला के जिन लक्षणों की चर्चा करता है उनके अनुसार नगर के चतुर्दिक्ष गहरी परिखा (खाई), ऊँचे कप (चबूतरा) पर बना हुआ प्रकार, में यथास्थान द्वारा, कोष्ठ तथा अट्टालक (बुर्जी) बने होने चाहिए।
- कहा जा सकता है कि यह विवरण काल्पनिक न होकर वास्तविकता पर आधारित है तथा मौर्य शासकों का नगर विज्ञास इसी के अनुस्प रहा होगा। कौटिल्य के इस विवरण की पुष्टि यूनानी-रोमन लेखकों के विवरण से भी हो जाती है।
- इन लेखकों ने चन्द्रगुप्त मौर्य की राजधानी पाटलिपुत्र तथा वहाँ स्थित उसके भव्य राजप्रासाद का विवरण दिया है। **स्ट्रैबो** पाटलिपुत्र का वर्णन इस प्रकार करता है "पोलिबोथ्रा (पाटलिपुत्र) गंगा और सोन के संगम पर स्थित था। इसकी लम्बाई 80 स्टेडिया तथा चौड़ाई 18 स्टेडिया थी।

- यह समानान्तर चतुर्भुज के आकार का था इसके चारों ओर लगभग 700 फीट चौड़ी खाई थी। नगर के चतुर्दिक्ष लकड़ी की दीवार बनी हुई थी जिसमें बाण छोड़ने के लिये सुरक्षा बनाये गये थे।
- इस नगर में चन्द्रगुप्त मौर्य का भव्य राजप्रासाद स्थित था। यह वस्तुतः एक विशाल भवन-समूह था जिसमें अनेक बड़े-बड़े कमरे थे। इनके चमकते स्तम्भों में सोने की लता प्रावली तथा चाँदी की चिदियाँ बनी हुई थीं।
- इनमें सर्वप्रमुख भवन अनेक स्तम्भों वाला मण्डप था जो लकड़ी के ऊँचे धरातल पर टिका हुआ था। यह राजप्रासाद एक बड़े पार्क के बीच स्थित था। इसमें छायादार एवं हरे-भरे वृक्ष लगे हुए थे।
- यहाँ अनेक सरोबर थे जिनमें विविध आकार प्रकार की मछलियाँ पाली गई थीं। सूसा तथा एक बतना के राजप्रासाद भी भव्यता में इसकी बराबरी नहीं कर सकते थे।
- पटना के समीप बुलन्दीबाग तथा कुम्हार में की गई खुदाई में लकड़ी के विशाल भवनों के अवशेष प्रकाश में आये हैं। इन्हें प्रकाश में लाने का श्रेय स्पूनर महोदय को है।
- बुलन्दीबाग से नगर के परकोटे (Palisade) के अवशेष तथा कुम्हार से, राजप्रासाद के अवशेष प्राप्त हुए हैं। परकोटे की लम्बाई 450 फुट तक है।
- इसमें दोनों ओर लकड़ी के लट्ठों की विशाल दीवारें हैं। प्रत्येक लट्ठा 19 फुट ऊँचा तथा एक फुट चौड़ा है। लट्ठे की दोनों दीवारों को 14 फुट के बड़े लट्ठों से लोड़ा गया है। उनके बीचों बीच कूटी हुई मिट्ठी भरी गयी है। कुम्हार के प्रासाद अवशेष से पता चलता है कि यह एक भवन समूह था। एक भवन के अवशेष में पथर के विशाल स्तम्भ खड़े हैं जो किसी विशाल स्तम्भ-मण्डप की छत के आधार रहे होंगे। यही सम्भवतः चन्द्रगुप्त मौर्य का विशाल सभाभवन था।
- यह ऐतिहासिक काल का पहला विशाल अवशेष है जो एक मण्डप के स्प में है। मण्डप के मुख्य भाग में दस-दस स्तम्भों की आठ कतारें पूरब से पश्चिम की ओर बनी हैं। इसके पूरब की ओर दो और स्तम्भ खण्डित अवस्था में मिलते हैं।
- मण्डप के एक ओर काष्ठमंच मिलते हैं जिन्हें काष्ठशिल्प का अद्भुत उदाहरण माना जा सकता है। खुदाई में अशोक के स्तम्भ से मिलता-जुलता एक स्तम्भ का निचला भाग पूर्ण अवस्था में प्राप्त हुआ है।
- यह राजप्रासाद चौथी शताब्दी ईस्की में व्यों-का-त्यों विद्यमान था और फाहान को यह देखकर आश्र्य हुआ था कि 'इसे संसार के मनुष्य नहीं बना सकते, अपितु यह देवताओं द्वारा बनाया गया लगता है।'
- इस प्रकार मौर्य युग में काष्ठकला अपने विकास की पराकाष्ठा पर पहुँच गयी थी। ईलियन के अनुसार सूसा तथा एक बतना के राजप्रासाद भी भव्यता में पाटलिपुत्र के राजप्रासाद की बराबरी नहीं कर सकते थे।
- मौर्य राजप्रासाद की समता कुछ विद्वान् पर्सिपोलिस से प्राप्त हुए सौ स्तम्भों वाले हथामनी प्रासाद से करते हैं।

ओडिसी	ओडिशा	प्रोतिमा देवी, संयुक्ता पाणिग्रही, सोनल मानसिंह, केलुचरण महापात्र, माधवी मुदगल
मणिपुरी	मणिपुर	सूर्यमुखी देवी, गुरु विपिन सिंह

भारत के प्रमुख लोकनृत्य

राज्य	लोकनृत्य
असम	बिहू, खेलगोपाल, कलिगोपाल, बोर्ड सालू, नटपूजा मीटू।
पंजाब	कीकली, भाँगडा, गिद्दा
हिमाचल	बद्धा, नाटी, चम्बा, छपेली
प्रदेश	
हरियाणा	धमाल, खोरिया, फाग, डाहीकल
महाराष्ट्र	लेलिम, तमाशा, लावनी, कोली
जम्मू कश्मीर	- दमाली, हिकात, दण्डी नाच, राऊ, लडाखी
राजस्थान	गणगांर, झूमर, धूमर, झूलन लीला
गुजरात	गरबा, डाण्डिया रास, पणिहारी, रासलीला, लारथा, गणपति भवन
बिहार	बट - बाटिन, धुमकड़िया, कीर्तनिया, पंवारियाँ, सोहराई, सामा, चकेवा, बात्रा
उत्तर प्रदेश	डांगा, झीका, छाऊ, लुझरी, झोरा, कलरी, नौटंकी, थाली, बढ़ा
केरल	भट्टकली, पायदानी, कुड़ीअट्टम, कालीअट्टम, मोहिनीअट्टम
पश्चिम बंगाल	करणकाठी, गम्भीरा, बलाया, बाउल नृत्य, कथि, बात्रा
नागार्लेण्ड	कुमीनागा, रेंगमनागा, लिम, चोंग, खेवा
मणिपुर	संकीर्तन, लाईहरीबा, थांगटा की तलम, बसन्तराम, राख्ताल
मिजोरम	चेरोकान, पाखुलिया नृत्य
झारखण्ड	सुआ, पंथी, राउत, कर्मा, फुलकी डोरला, सरहुल, पाइका, नटुआ, छकु
ओडिशा	अग्नि, डंडानट, पैका, बद्दर, मुदारी, आया, सवारी, छाऊ
उत्तराखण्ड	चांचरी / झोड़ा, छपेली, छोलिया, झुम्मेलो, बागर, कुमार्यू नृत्य, चौफल, छोलिया
कर्नाटक	यक्षगान, भूतकोला, वीरगास्से, कोडावा
आनंद प्रदेश	घण्टा मर्दला, बतकम्मा, कुम्मी, छड़ी, सिंद्धि माधुरी
छत्तीसगढ़	सुआ करमा, रहस, राउत, सरहुल, बार, नाचा, घसिया बाला, पंथी
तमिलनाडु	कोलट्टम, कुम्मी कारागम्
अरुणाचल प्रदेश	युद्ध नृत्य, लायन एंड पीक डांस, रिखमपाड़ा नृत्य, बुईआ नृत्य, खांपटी नृत्य, बारडो छम, तापु नृत्य, दामिंडा डांस, पोंग नृत्य,

व्राय यंत्र	प्रसिद्ध व्राय यंत्र एवं व्रादक
बाँसुरी	हरिप्रसाद चौरसिया, रघुनाथ सेठ, पञ्चालाल घोष, प्रकाश सक्सेना, देवेन्द्र मुक्तेश्वर, प्रकाश बढ़ेरा, राजेन्द्र प्रसन्ना
बायलिन	बालमुरली कृष्णन, गोविन्दस्वामी पिल्लई, टी एन कृष्णन, आर पी शास्त्री, संदीप ठाकुर, बी शशि कुमार, एन राजम
सरोद	अली अकबर खाँ, अलाउद्दीन खाँ, अशोक कुमार राय, अमनद अली खाँ
सितार	पं. रविशंकर, उस्ताद विलायत खाँ
शहनाई	बिस्मिल्ला खाँ, शैलेश भागवत, अनंत लाल, भोलानाथ तमन्ना, हरिसिंह
तबला	अल्ला रक्खा, बाकिर हुसेन, लतीफ खाँ, गुरुद्व भारान, अम्बिका प्रसाद
हारमोनियम	रवीन्द्र तालेगांवकर, अप्पा लुलगावकर, महमूद ब्रह्मस्वरूप सिंह, एस. बालचन्द्रन, असद अली, गोपालकृष्ण
बीणा	पं. शिवकुमार शर्मा, तरुण भट्टाचार्य
सारंगी	पं. रामनारायण, ध्रुव घोष, अरुण काले, आशिक अली खाँ, बजीर खाँ, रमबान खाँ
गिटार	विश्वमोहन भट्ट, ब्रजभूषण काबरा, केशव तालेगांवकर, नलिन मल्हमदार

लोककला शैलियाँ

शैली	राज्य
रंगोली	महाराष्ट्र / गुजरात
अल्पना	पश्चिम बंगाल
मण्डाना, मेहँदी	राजस्थान
अरिपन, गोदना	बिहार
रंगवल्ली	कर्णाटक
ऐपण	उत्तराखण्ड
अटूपना	हिमाचल
चौक पूरना	उत्तर प्रदेश
कलमकारी, मुगगु	आंध्रप्रदेश
फुलकारी	हरियाणा
सधिया	गुजरात
कोल्लम	तमिलनाडु
कालम	केरल

वास्तुकला शैलियाँ

शैली	विशेषता	नमने
नागर	चतुर्भुजाकार भवन	सूर्य मन्दिर (कोणार्क), लग्नाथ मन्दिर (पुरी), शैली भवन कन्दरिया महादेव मन्दिर (खजुराहो), दिलवाड़ा लैंग मन्दिर (माउण्ट आबू)

अध्याय - 3

मुगल काल

- राजनीतिक चुनौतियाँ एवं सुलह-अफगान, राजपूत, दक्षकी राज्य और मराठा
- पानीपत के मँदान में 21 अप्रैल, 1526 को इब्राहिम लोदी और चुगताई तुर्क बलालुद्दीन बाबर के बीच युद्ध लड़ा गया, जिसमें लोदी वंश के अंतिम शासक इब्राहिम लोदी को पराजित कर खानाबदेश बाबर ने तीन शताब्दियों से सत्तास्थ तुक अफगानी सुल्तानों की - दिल्ली सल्तनत का तख्ता पलटकर रख दिया और मुगल साम्राज्य और मुगल सल्तनत की नीव रखी। गुप्त वंश के पश्चात् मध्य भारत में केवल मुगल साम्राज्य ही ऐसा साम्राज्य था, जिसका एकाधिकार हुआ था।
- मुगल वंश का संस्थापक बाबर था, अधिकतर मुगल शासक तुर्क और सुन्नी मुसलमान थे, मुगल शासन 17 वीं शताब्दी के आखिर में और 18 वीं शताब्दी की शुरुआत तक चला और 19 वीं शताब्दी के मध्य में समाप्त हुआ।

बाबर का शासन काल (1526 – 1530 ई.)

- बाबर का जन्म छोटी सी रियासत 'फरगना' में 1483 ई. में हुआ था। वो फिल्हाल उद्घोकिस्तान का हिस्सा है।
- बाबर अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् मात्र ॥ वर्ष की आयु में ही फरगना का शासक बन गया था। बाबर को भारत आने का निमंत्रण पंजाब के सूबेदार दाँलत खाँ लोदी और इब्राहिम लोदी के चाचा आलम खाँ लोदी ने भेजा था।
- पानीपत का प्रथम युद्ध 21 अप्रैल, 1526 ई. को इब्राहिम लोदी और बाबर के बीच हुआ, जिसमें बाबर की जीत हुई।

खनवा का युद्ध 17 मार्च 1527 ई. में राणा सांगा और बाबर के बीच हुआ, जिसमें बाबर की जीत हुई।

- चंद्रेरी का युद्ध 29 मार्च 1528 ई. में मेदिनी राय और बाबर के बीच हुआ, जिसमें बाबर की जीत हुई।
- घाघरा का युद्ध 6 मई 1529 ई. में अफगानों और बाबर के बीच हुआ, जिसमें बाबर की जीत हुई।

जोट :- पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर ने पहली बार तुगलमा / तुलगमा युद्ध नीति का इस्तेमाल किया।

- उसकी विवरण का मुख्य कारण उसका तोपखाना और कुशल सेना प्रतिनिधित्व था। भारत में तोप का सर्वप्रथम प्रयोग बाबर ने ही किया था।

पानीपत के इस प्रथम युद्ध में बाबर ने उद्घोकों की 'तुलगमा युद्ध पद्धति' तथा तोपों को सजाने के लिए 'उस्मानी विधि' जिसे 'स्मी विधि' भी कहा जाता है, का प्रयोग किया था।

- बाबर ने दिल्ली सल्तनत के पतन के पश्चात् उनके शासकों 'को (दिल्ली शासकों) सुल्तान' कहे जाने की परम्परा को तोड़कर अपने आप को 'बादशाह' कहलावाना शुरू किया।

पानीपत के युद्ध के बाद बाबर का दूसरा महत्वपूर्ण युद्ध राणा सांगा के विरुद्ध 17 मार्च, 1527 ई. में आगरा से 40

किमी दूर खानवा नामक स्थान पर हुआ था। जिसमें विवर प्राप्त करने के पश्चात् बाबर ने गाढ़ी की उपाधि धारण की थी। इस युद्ध के लिए अपने सैनिकों का मनोबल बढ़ाने के लिये बाबर ने 'बिहाद' का नाश दिया था।

- साथ ही मुसलमानों पर लगने वाले कर तमगा की समाप्ति की घोषणा की थी, यह एक प्रकार का व्यापारिक कर था। राजपूतों के विरुद्ध इस 'खानवा' के युद्ध का प्रमुख कारण बाबर द्वारा भारत में ही रुकने का निश्चय था।
- 29 जनवरी, 1528 को बाबर ने चंद्रेरी के शासक मेदिनी राय पर आक्रमण कर उसे पराजित किया था। यह विवर बाबर को मालवा जीतने में सहायता रही थी।
- इसके बाद बाबर ने 06 मई, 1529 में 'घाघरा' का युद्ध लड़ा था। जिसमें बाबर ने बंगाल और बिहार की संयुक्त अफगान सेना को हराया था।
- बाबर ने अपनी आत्मकथा 'बाबरनामा' का निर्माण किया था, जिसे तुर्की में 'तुबुक-ए-बाबरी' कहा जाता है। जिसे बाबर ने अपनी मातृभाषा चुगताई तुर्की में लिखा है।
- इसमें बाबर ने तत्कालीन भारतीय दशा का विवरण दिया है, जिसका फारसी अनुवाद अब्दुर्रहीम खानखाना ने किया है और अंग्रेजी अनुवाद श्रीमती बेबिल द्वारा किया गया है।
- बाबर ने अपनी आत्मकथा में 'बाबरनामा कृष्णदेव राय तत्कालीन विवरणग्र' के शासक को समकालीन भारत का शक्तिशाली राजा कहा है। साथ ही पांच मुस्लिम और दो हिन्दू राजाओं मेवाड़ और विवरणग्र का ही निक्रिया है।
- बाबर ने 'रिसाल-ए-उस्ल' की रचना की थी, जिसे 'खत-ए-बाबरी' भी कहा जाता है। बाबर ने एक तुर्की काव्य संग्रह 'दिवान' का संकलन भी करवाया था। बाबर ने 'मुबङ्गान' नामक पद्ध शैली का विकास भी किया था।
- बाबर ने संभल और पानीपत में मस्जिद का निर्माण भी करवाया था। साथ ही बाबर के सेनापति मीर बाकी ने अयोध्या में मंदिरों के बीच 1528 से 1529 के मध्य एक बड़ी मस्जिद का निर्माण करवाया था, जिसे बाबरी मस्जिद के नाम से जाना गया।
- बाबर ने आगरा में एक बाग का निर्माण करवाया था, जिसे 'नर-ए-अफगान' कहा जाता था, जिसे वर्तमान में 'आरामबाग' के नाम से जाना जाता है। इसमें चारबाग शैली का प्रयोग किया गया है।
- यहाँ पर 26 दिसम्बर, 1530 को बाबर की मृत्यु के बाद उसको दफनाया गया था। परन्तु कुछ समय बाद बाबर के शव को उसके द्वारा ही चुने गए स्थान काबुल में दफनाया गया था।

हुमायूँ (1530 ई. – 1556 ई.)

- बाबर की मृत्यु के बाद उसका पुत्र हुमायूँ मुगल वंश के शासन पर बैठा।
- हुमायूँ ने अपने साम्राज्य का विभाजन भाइयों में किया था। उसने कामरान को काबुल एवं कंधार, अस्करी को संभल तथा हिंदाल को अलवर प्रदान किया था।

- हुमायूँ का सबसे बड़ा प्रतिद्वंदी अफगान नेता शेर खां था, जिसे शेरशाह शूरी भी कहा जाता है।
- हुमायूँ का अफगानों से पहला मुकाबला 1532 ई. में दाहौरिया 'नामक स्थान पर हुआ। इसमें अफगानों का नेतृत्व महमूद लोदी ने किया था। इस संघर्ष में हुमायूँ सफल रहा।
- 1532 ई. में हुमायूँ ने दिल्ली में 'दीन पनाह' नामक नगर की स्थापना की।
- 1535 ई. में ही उसने बहादुर शाह को हराकर गुजरात और मालवा पर विजय प्राप्त की।
- शेर खां की बढ़ती शक्ति को दबाने के लिए हुमायूँ ने 1538 ई. में चुनारगढ़ के किले पर दूसरा घेरा डालकर उसे अपने अधीन कर लिया।
- 1538 ई. में हुमायूँ ने बंगाल को जीतकर मुगल शासक के अधीन कर लिया। बंगाल विजय से लॉट्टे समय 26 लून, 1539 को चौसा के युद्ध में शेर खां ने हुमायूँ को बुरी तरह पराजित किया।
- शेर खां ने 17 मई, 1540 को बिलग्राम के युद्ध में पुनः हुमायूँ को पराजित कर दिल्ली पर बँठा। हुमायूँ को मर्जिया होकर भारत से बाहर भागना पड़ा।
- 1545 ई. में हुमायूँ ने कामरान से काबुल और गंधार छीन लिया।
- 15 मई, 1555 को मच्छीवाड़ा तथा 22 लून, 1555 को सरहिन्द के युद्ध में सिकन्दर शाह शूरी को पराजित कर हुमायूँ ने दिल्ली पर पुनः अधिकार लिया।
- 23 जुलाई, 1555 को हुमायूँ एक बार फिर दिल्ली के सिंहासन पर आसीन हुआ, परन्तु अगले ही वर्ष 27 जनवरी, 1556 ई. को पुस्तकालय की सिद्धियों से गिर जाने से उसकी मृत्यु हो गयी।
- लेनपूल ने हुमायूँ पर टिप्पणी करते हुए कहा, "हुमायूँ बीवन भर लङ्खड़ाता रहा और लङ्खड़ाते हुए उसने अपनी जान दे दी।"
- बँरम खां हुमायूँ का योग्य एवं वफादार सेनापति था, जिसने निर्वासन तथा पुनः राज सिंहासन प्राप्त करने में हुमायूँ की मदद की।

शेरशाह सूरी (1540 ई. - 1545 ई.)

- बिलग्राम के युद्ध में हुमायूँ को पराजित कर 1540 ई. में 67 वर्ष की आयु में दिल्ली की गदी पर बँठा। इसने मुगल साम्राज्य की नींव उखाड़ कर भारत में अफगानों का शासन स्थापित किया।
- इसके बचपन का नाम फरीद था। शेरशाह का पिता हसन खां बाँनपुर का एक छोटा जागीरदार था।
- 1539 ई. में बंगाल के शासक नुसरत शाह को पराजित करने के बाद शेर खां ने 'हबरत-ए-आला' की उपाधि धारण की।
- 1539 ई. में चौसा के युद्ध में हुमायूँ को पराजित करने के बाद शेर खां ने 'शेरशाह' की उपाधि धारण की।

- 1540 में दिल्ली की गदी पर बँठने के बाद शेरशाह ने सूखांश अथवा द्वितीय अफगान साम्राज्य की स्थापना की।
- शेरशाह ने अपनी उत्तरी पश्चिमी सीमा की सुरक्षा के लिए 'रोहतासगढ़' नामक एक सुदृढ़ किला बनवाया।
- 1544 ई. में शेरशाह ने मारवाड़ के शासक मालदेव पर आक्रमण किया। इसमें उसे बड़ी मुश्किल से सफलता मिली। इस युद्ध में राजपूत सरदार वंता 'आँर' कुप्पा ने अफगान सेना के छक्के छुड़ा दिए।
- 1545 ई. में शेरशाह ने कालिंजर के मर्जिया किले का घेरा डाला, जो उस समय कीरत सिंह के अधिकार में था, परन्तु 22 मई 1545 को बास्ट के ढेर में विस्फोट के कारण उसकी मृत्यु हो गयी।
- प्रसिद्ध ग्रैंड ट्रैक रोड (पेशावर से कलकत्ता) की मरम्मत, करवाकर व्यापार और आवागमन को सुगम बनाया।
- शेरशाह का मकबरा बिहार के सासाराम में स्थित है, जो मध्यकालीन कला का एक उत्कृष्ट नमूना है।
- शेरशाह की मृत्यु के बाद भी सूर वंश का शासन 1555 ई. में हुमायूँ द्वारा पुनः दिल्ली की गदी प्राप्त करने तक कायम रहा।

अकबर (1556 - 1605 ई.)

हुमायूँ की मृत्यु के बाद उसके पुत्र अकबर का कलानौर नामक स्थान पर 14 फरवरी, 1556 को मात्र 13 वर्ष की आयु में राज्याभिषेक हुआ।

- अकबर का जन्म 15 अक्टूबर, 1542 को अमरकोट के राजा वीरमाल के प्रसिद्ध महल में हुआ था।
- अकबर ने बचपन से ही गलनी और लाहौर के सूबेदार के स्प में कार्य किया था।
- भारत का शासक बनने के बाद 1556 से 1560 तक अकबर बँरम खां के संरक्षण में रहा।
- अकबर ने बँरम खां को अपना बबीर नियुक्त कर खान-ए-खाना की उपाधि प्रदान की थी।
- 5 नवम्बर, 1556 को पानीपत के द्वितीय युद्ध में अकबर की सेना का मुकाबला अफगान शासक मुहम्मद आदिल शाह के योग्य सेनापति हैमू की सेना से हुआ, जिसमें हैमू की हार एवं मृत्यु हो गयी।
- 1560 से 1562 ई. तक दो वर्षों तक अकबर अपनी धाय मां महम अनगा, उसके पुत्र आदम खां तथा उसके सम्बन्धियों के प्रभाव में रहा। इन दो वर्षों के शासनकाल को पेटीकोट सरकार की संज्ञा दी गयी है।
- अकबर ने 1575 ई. में फतेहपुर सीकरी में इबादतखाना की स्थापना की। इस्लामी विद्वानों की अशिष्टता से दुखी होकर अकबर ने 1578 ई. में इबादतखाना में सभी धर्मों के विद्वानों को आमंत्रित करना शुरू किया।
- 1582 ई. में अकबर ने एक नवीन धर्मी ताँहीद-ए-इलाही 'या दीन-ए-इलाही' की स्थापना की, जो वास्तव में विभिन्न धर्मों के अच्छे तत्वों का मिश्रण था।
- अकबर ने सती प्रथा को रोकने का प्रयत्न किया, साथ ही विधवा विवाह को कानूनी मान्यता दी। अकबर ने लड़कों

के विवाह की उम्र 16वर्ष और लड़कियों के लिए 14वर्ष निर्धारित की।

- अकबर ने 1562 ई. में दास प्रथा का अंत किया तथा 1563 में तीर्थ यात्रा पर से कर को समाप्त कर दिया।
- अकबर ने 1664 ई. में जलिया कर समाप्त कर सामाजिक सद्भावना को सुदृढ़ किया।
- 1579 ई. में अकबर ने मजहर 'या अमोघवृत्त की घोषणा की।
- अकबर ने गुबर्शत विजय की स्मृति में फतेहपुर सीकरी में बुलन्द दरवाजा 'का निर्माण कराया था।
- अकबर ने 1575-77 ई. में सम्पूर्ण साम्राज्य को 12सूबों में बांटा था, जिनकी संख्या बराड़, खानदेश और अहमद नगर को बीतने के बाद बढ़कर 15 हो गयी।
- अकबर ने सम्पूर्ण साम्राज्य में एक सरकारी भाषा (फारसी), एक समाज मुद्दा प्रणाली, समाज प्रशासनिक व्यवस्था तथा बाँट, माप प्रणाली की शुरुआत की।
- अकबर ने 1574 -75 ई. में मनसबदारी प्रथा' की शुरुआत किया।

बहाँगीर (1605 ई. - 1627 ई.)

- 17 अक्टूबर 1605 को अकबर की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र सलीम बहाँगीर के नाम से गढ़ी पर बैठा। गढ़ी पर बैठते ही सर्वप्रथम 1605 ई. में बहाँगीर को अपने पुत्र खुसरो के विद्रोह का सामना करना पड़ा। बहाँगीर और खुसरो के बीच भेशवल नामक स्थान पर एक युद्ध हुआ, जिसमें खुसरो पराजित हुआ।
- 1585 ई. में बहाँगीर का विवाह आमेर के राजा भगवान दास की पुत्री तथा मानसिंह की बहन मानबाई से हुआ, खुसरो मानबाई का ही पुत्र था।
- बहाँगीर का दूसरा विवाह राजा उदयसिंह की पुत्री लगत गोसाई से हुआ था, जिसकी संतान शाहबादा खुर्म (शाहबहाँ) था।
- मई 1611 ई. में बहाँगीर ने मेहरुन्निसा नामक एक विधवा से विवाह किया जो, फारस के मिर्जा ग्यास बेग की पुत्री थी। बहाँगीर ने मेहरुन्निसा को नूरमहल 'एवं नूरबहाँ की उपाधि दी।
- नूरबहाँ के पिता ग्यास बेग को बजीर का पद प्रदान कर एत्मादौला की उपाधि दी गई, जबकि उसके शाही आसफ खाँ को खान-ए-सामा का पद मिला।
- 1605 से 1615 ई. के मध्य कई लड़ाइयों के बाद बहाँगीर ने मेहरुन्निसा के साथ संधि कर ली।
- 1621 ई. में बहाँगीर ने अपना दक्षिण अभियान समाप्त कर दिया क्योंकि इसके बाद वह 1623 ई. में शाहबहाँ के विद्रोह, 1626 में महावत खाँ के विद्रोह के कारण उलझ गया।
- बहाँगीर के दक्षिण विजय में सबसे बड़ी बाधा अहमदनगर के योग्य बचीर मलिक अंबर की उपस्थिति थी। उसने मुगलों के विरोध गुरिल्ला युद्ध नीति अपनाई और बड़ी संख्या में सेना में मराठों की भर्ती की।

- बहाँगीर के शासन की सबसे उल्लेखनीय सफलता 1620 ई. में उत्तरी पूर्वी पंचाब की पहाड़ियों पर स्थित कांगड़ा के दुर्ग पर अधिकार करना था।
- 1626 में महावत खाँ का विद्रोह बहाँगीर के शासनकाल की एक महत्वपूर्ण घटना थी। महावत खाँ ने बहाँगीर को बंदी बना लिया था। नूरबहाँ की बुद्धिमानी के कारण महावत खाँ की योजना असफल सिद्ध हुई।
- नूरबहाँ से संबंधित सबसे महत्वपूर्ण घटना उसके द्वारा बनाया गया 'कुटा गुट' था। गुट में उसके पिता एत्मादौला, माता अस्मत बेगम, शाही आसफ खान और शाहबादा खुर्म सम्मिलित थे।
- बहाँगीर ने तुलुक-ए-बहाँगीरी नाम से अपनी आत्मकथा की रचना की।
- बहाँगीर ने तंबाकू के सेवन पर प्रतिबंध लगाया था।
- बहाँगीर के शासन काल में इंगलैण्ड के सम्राट लेम्स प्रथम ने कप्तान हॉकिंस (1608) और थॉमस (1615) को भारत भेजा। जिससे अंग्रेज भारत में कुछ व्यापारिक सुविधाएँ प्राप्त करने में सफल हुए।
- नूरबहाँ की माँ अस्मत बेगम ने ईत्र बनाने की विधि का आविष्कार किया।
- बहाँगीर धार्मिक दृष्टि से सहिष्णु था। वह अकबर की तरह ब्राह्मणों और मंदिरों को दान देता था। उसने 1612 ई. में पहली बार रक्षाबंधन का त्याहार मनाया।
- अकबर सलीम को शेखबाबा कहा करता था। उसने अकबर द्वारा बारी गाँ हत्या जिषेध की परम्परा को बारी रखा।
- बहाँगीर ने सूरदास को अपने दरबार में आश्रय दिया था, जिसने सूरसागर 'की रचना की।
- बहाँगीर के शासन काल में कला और साहित्य का अप्रतिम विकास हुआ। नवंबर 1627 में बहाँगीर की मृत्यु हो गई। उसे लाहौर के शाहदरा में रावी नदी के किनारे दफनाया गया।

शाहबहाँ (1627 ई. - 1658 ई.)

- शाहबहाँ (खुर्म) का जन्म 1592 में बहाँगीर की पन्नी लगत गोसाई से हुआ।
- बहाँगीर की मृत्यु के समय शाहबहाँ दक्कन में था। बहाँगीर की मृत्यु के बाद नूरबहाँ ने लाहौर में अपने दामाद शहरयार को सम्राट घोषित कर दिया। जबकि आसफ खाँ ने शाहबहाँ के दक्कन से आगरा वापस आने तक अंतरिम व्यवस्था के रूप में खुसरो के पुत्र द्वारा बक्श को राजगढ़ी पर आसीन किया।
- शाहबहाँ ने अपने सभी भाइयों एवं सिंहासन के सभी प्रतिवंदियों तथा अंत में द्वारा बक्श की हत्या कर 24 फरवरी 1628 में आगरा के सिंहासन पर बैठा।
- शाहबहाँ का विवाह 1612 ई. में आसफ की पुत्री और नूरबहाँ की भतीजी 'अर्दुमंद बाजो बेगम' से हुआ था, जो बाद में इतिहास में मुमताल महल के नाम से विच्छात हुई।

अध्याय - 2

राष्ट्रवाद का उदय

- 1857 की क्रांति से पूर्व के विद्रोह
राजनीतिक - धार्मिक आंदोलन
फकीर विद्रोह (1776-77)
- यह विद्रोह बंगाल में विचरणशील मुसलमान धार्मिक फकीरों द्वारा किया गया था। इस विद्रोह के नेता मबनू शाह ने अंग्रेजी सत्ता को चुनाँती देते हुए लमीदारों और किसानों से धन इकट्ठा करना आरम्भ कर दिया।
- मबनू शाह की मृत्यु के बाद चिराग अली शाह ने आंदोलन को नेतृत्व प्रदान किया। पठानों राजपूतों और सेना से जिकाले गये भारतीय सैनिकों ने उनकी मदद की।
- देवी चाँधशानी और भगवानी पाठक इस आंदोलन से बुझ प्रसिद्ध हिन्दू नेता थे।

सन्यासी विद्रोह (1770 - 1820)

- सन्यासी विद्रोह भारत की आजादी के लिए बंगाल में अंग्रेज हुकूमत के विरुद्ध किया गया। एक प्रबल विद्रोह था। सन्यासियों में अधिकांश शंकराचार्य के अनुयायी थे।
- इतिहास प्रसिद्ध इस विद्रोह की स्पष्ट जानकारी बंकिमचन्द्र घटकी के उपन्यास 'आनन्दमठ' में मिलती है।
- बंगाल में अंग्रेजी हुकूमत के कायम होने पर लमीदार, कृषक, शिल्पकार सभी की स्थिति बदलते हो गई थी।
- इसके अलावा बंगाल का 1770 ई. का भयानक अकाल तथा अंग्रेजी सरकार द्वारा इसके प्रति बरती गई उदासीनता इस विद्रोह का प्रमुख कारण थी।
- भारतीय जनता के तीर्थ स्थानों पर जाने पर लगे प्रतिबन्ध ने शान्त सन्यासियों को भी विद्रोह पर उतार कर दिया। इन सभी तत्वों (लमीदार, कृषक, शिल्पी व सन्यासियों) ने मिलकर अंग्रेजी सरकार का विरोध किया।
- इस विद्रोह को कुचलने के लिए वारेन हेस्टिंग्स को कठोर कार्रवाई करनी पड़ी थी।

पागलपंथी विद्रोह

- उत्तर-पूर्वी भारत में प्रभावी पागलपंथी एक धार्मिक पंथ था। उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में हिन्दू मुसलमान और गारो तथा जांग आदिवासी इस पंथ के समर्थक थे।
- इस क्षेत्र में अंग्रेजों द्वारा क्रियान्वित भू-राजस्व तथा प्रशासनिक व्यवस्था के कारण व्यापक असंतोष था।
- इसके परिणामस्वरूप 1825 ई. में पागलपंथियों के नेता टीपू ने विद्रोह कर दिया। यह विद्रोह लगभग दो दशकों तक चला। इस विद्रोह के दौरान टीपू इतना प्रभावशाली हो गया की उसने उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में ऑपनिवेशक प्रशासन के समान्तर एक और प्रशासनिक तंत्र का गठन कर लिया। इस विद्रोह को 1833 ई. में ढबा दिया गया।

बहाबी आंदोलन (1830 - 70)

- बहाबी आंदोलन मूलतः एक इस्लामिक सुधारवादी आंदोलन था। विसने कालांतर में मुस्लिम समाज में व्याप्त अन्धविश्वास एवं कुस्तियों के उन्मूलन को अपना उद्देश्य बनाया।
- इस आंदोलन के संस्थापक अब्दुल बहाबी के नाम पर इसका नाम बहाबी आंदोलन पड़ा।
- सैयद अहमद बरेलवी ने भारत में इस आंदोलन को प्रेरणा प्रदान की। इस आंदोलन के तहत सैयद अहमद ने सन 1830 में पेशावर पर नियंत्रण कर लिया और अपने नाम के सिक्के चलवाए। किन्तु 1831 में बालाकोट के युद्ध में इनकी मृत्यु हो गई।
- सैयद अहमद की अचानक मृत्यु के बाद बहाबी आंदोलन का मुख्य केन्द्र पटना हो गया। इस आंदोलन की अनेक कम्बलोरियां थीं जैसे साम्प्रदायिक उन्माद तथा धर्माधिता। इसके बावजूद बहाबीयों ने हिन्दूओं का विरोध कभी नहीं किया।
- बहाबी आंदोलन भारत को अंग्रेजों से मुक्त करना चाहता था। परन्तु इस आंदोलन का उद्देश्य भारत के लिए स्वतंत्रता प्राप्त करना नहीं बल्कि मुस्लिम शासन की पुनर्स्थापना करना था। 1870 के आस-पास अंग्रेजों ने इस आंदोलन का दमन कर दिया।

कूका विद्रोह

- कूका विद्रोह की शुरुआत पंचाब में 1860-1870 ई. में हुई थी। बहाबी विद्रोह की भाँति 'कूका विद्रोह' का भी आरम्भिक स्वरूप धार्मिक था, किन्तु बाद में यह राजनीतिक विद्रोह के स्पर्श में परिवर्तित हो गया।
- इसका सामान्य उद्देश्य अंग्रेजों को देश से बाहर निकालना था।
- पश्चिमी पंचाब में 'कूका विद्रोह' की शुरुआत लगभग 1840 ई. में 'भगत जबाहर मल' द्वारा की गयी थी। भगत जबाहर मल को 'सियान साहब' के नाम से भी जाना जाता था।
- प्रारम्भ में इस विद्रोह का उद्देश्य सिक्ख धर्म में प्रचलित बुराईयों को दूर कर इसे शुद्ध करना था।
- सियान साहब ने अपने शिष्य 'बालक सिंह' के साथ मिलकर अपने अनुयायियों का एक दल गठित किया।
- इस दल का मुख्यालय 'हजारा' में हुआ करता था। इस विद्रोह के विरुद्ध अपनी दमनकारियों नीतियों को अपनाते हुये अंग्रेजों ने 1872 ई. में इसके एक नेता 'रामसिंह' को रंगून निर्वासित कर दिया और आंदोलन पर नियंत्रण पा लिया गया।

अपदस्थ शासकों के आंदोलन

बेलुपंथी का विद्रोह :-

- बेलुपंथी त्रावणकोर केरल का दीवान था। पद से हटाये जाने और राज्य पर भारी वित्तीय बोझ डाले जाने के खिलाफ उसने विद्रोह कर दिया।

- अंग्रेजों से लड़ाई में वेलूपंथी घायल हो गया और बंगल की तरफ भाग गया वहाँ उसकी मृत्यु हो गई। मरने के बाद अंग्रेजी सेना ने उसे सार्वजनिक स्प से फांसी पर लटका दिया।

विशाखापट्टनम का विद्रोह (1827 - 30)

- विशाखापट्टनम जिले में अपनी सम्पत्ति बद्ध कर लिए जाने तथा लगान का भुगतान ना किये जाने के कारण सरकार द्वारा कठोर तरीके अपनाये जाने के विरोध में स्थानीय जमीदारों ने सन् 1827- 30 के बीच अनेक विद्रोह किये कालांतर में सरकार ने इन सभी विद्रोह को दबा दिया।
अपदस्त शासकों के आश्रितों का विद्रोह

समोसी विद्रोह

- समोसी मराठा राज्य के अधीनस्थ कर्मचारी थे जिन्होंने मराठा राज्य के पतन के उपरांत कृषि को रोबगार के स्प में अपना लिया।
- अत्यधिक लगान वसूली के कारण 1822 में उन्होंने विद्रोह कर दिया।
- इसी बीच सन् 1825 -26 में अकाल पड़ने के कारण उमा जी के नेतृत्व में उन्होंने पुनः विद्रोह किया ब्रिटिश सरकार ने उनके अपराधों को माफ़ कर दिया तथा भूमि अनुदान देने के साथ-साथ उन्हें पर्वतीय पुलिस में भर्ती किया।

गडकरी विद्रोह

- गडकरी विद्रोह अंग्रेजों के खिलाफ़ किया गया था। 1844 ई. में महाराष्ट्र में 'गडकरी जाति' के विस्थापित सैनिकों ने अंग्रेजों के खिलाफ़ इस विद्रोह को अंवाम दिया।
- गडकरियों ने 'सनमगढ़' तथा 'भूदरगढ़' के किलों को जीत लिया था। बाद के दिनों में अंग्रेजों ने इस विद्रोह को कुचल दिया, और किलों को फिर से प्राप्त कर लिया।

सावन्तवादी विद्रोह

- प्रवासीवादी विद्रोह: प्रवासीवादी विद्रोह भारतीयों द्वारा अंग्रेजों के खिलाफ़ शुरू किया गया था।
- प्रवासीवादी विद्रोह 1845 में हुआ था।
 - प्रवासीवादी विद्रोह का नेतृत्व मराठा सरदार फोन्ड सावन्त ने किया था।
 - सावंत के कुछ सरोकारों और डेसिटीज़ की सहायता से देंक के कुछ किलों पर अधिकार कर लिया गया।
 - बाद में अंग्रेजी सेना ने मुठभेड़ में विद्रोहियों को राष्ट्रस्त कर दिया।
 - कई विद्रोही तो भाग गए और कुछ पकड़े गए विद्रोहियों पर देशद्रोह का मुकदमा चला गया।
 - अंग्रेज सरकार प्रवासीवादी विद्रोह का दमन करने में कामयाब रही।

ब्रिटिश भारत में जनजातीय आंदोलन

- ब्रिटिश शासन की स्थापना के बाद लागू की गई शू-राजस्व तथा प्रशासनिक व्यवस्था ने कालीबाई तथा विभिन्न विशिष्ट सामाजिक-आर्थिक व्यवस्थाओं को आँपनिवेशक व्यवस्था में शामिल कर लिया।

- इस नई व्यवस्था ने आदिवासीयों के शोषण का एक नया तंत्र स्थापित कर दिया जिसके कारण इन जनजातियों में बरकरार असंतोष फैला।

- आँपनिवेशक अर्थव्यवस्था ने अपने हित के उन्नयन के लिए जमीदारों तथा बिचोलिये वर्ग को बढ़ावा दिया।

- इस वर्ग ने आदिवासियों को कर के बटिल ढाँचे में उलझाकर उन्हें उनकी ही भूमि से बेदखल कर दिया। इससे वे आँपनिवेशक शोषण के अंतर्हीन जाल में फँस गए।

जनजातीय आंदोलन का स्वरूप

- सभी जनजातीय अथवा आदिवासी आंदोलनों की प्रष्ठ भूमि एकसमान थी। किन्तु इन आंदोलनों के समय तथा इनके द्वारा उठाये मुद्दों में पर्याप्त भिन्नता थी।

- कुँवर सुरेश सिंह ने इन आंदोलनों को तीन चरणों में विभाजित किया है।

- **प्रथम चरण - 1795 से 1820** के बीच था। इस समय अंग्रेजी शासन व्यवस्था युवावस्था की और बढ़ रही थी।

- **दूसरा चरण - दूसरा चरण 1860 से 1920 तक रहा।** इस चरण के दौरान आदिवासी आंदोलनों की प्रवृत्ति अलगाववादी आंदोलनों की बजाय राष्ट्रवादी तथा कृषक आंदोलनों में भाग लेने की रही। इसके अलावा दोनों चरणों में भिन्नता रही थी।

मुंडा एवं हो विद्रोह (1820-22)

- यह छोटा नागपुर एवं सिंह भूमि जिला से अंग्रेजों द्वारा मुंडा एवं हो जनजातियों को उनकी भूमि से बेदखल किए जाने से इस विद्रोह की नींव पड़ी हो जनजाति ने 1820-22 ईस्वी तक और 1831 ईस्वी में अंग्रेजी सेना का विद्रोह किया।

- राजा जगन्नाथ जो बंगाल के पाराहार के तत्कालीन राजा थे, उन्होंने आदिवासियों की इस विद्रोह में भरपूर सहायता की मेनर रफ़ सेन कठोर कार्यवाही से इस विद्रोह का दमन कर दिया। 18 से 74 में मुंडा विद्रोह शुरू हुआ, तथा 18 से 95 ईस्वी में बिरसा मुंडा द्वारा इस विद्रोह का नेतृत्व संभालने पर यह विद्रोह शक्तिशाली स्प से सामने आया।

- इन्होंने 18 से 99 ईस्वी. में क्रिसमस की पूर्व संध्या पर इस विद्रोह की उद्घोषणा की जो सन् उन्नीस साँ में पूरे मुंडा क्षेत्र में आग की तरह फैल गया। सन् उन्नीस साँ में अंग्रेजों द्वारा बिरसा मुंडा को गिरफ्तार कर लिया। वहाँ राँची की जेल में हैंजे से बिरसा मुंडा की मृत्यु हो गई।

कोल विद्रोह (1831)

- 1831 में छोटा नागपुर में यह कोल विद्रोह हुआ इस विद्रोह का प्रमुख कारण कोल आदिवासियों की जमीन छीनकर मुस्लिम और सिख सम्प्रदाय के किसानों को दे दी।

- इस विद्रोह में गंगा नारायण और बुद्ध भगत ने भूमिका निभाई यह विद्रोह मुख्य स्प से राँची हवारीबाग पलामू मानभूम और सिंह भूमि क्षेत्र में फैला।

रोलेट सत्याग्रह (1919) :-

- प्रथम विश्व युद्ध के दौरान गांधी ने भारत आगमन के साथ ही ब्रिटिश सरकार का सहयोग करते हुए भारतीयों को ब्रिटिश सेना में भर्ती होने के लिए प्रोत्साहित किया।
- इसी क्रम में सरकार ने उन्हें कैंसर-ए-हिन्द की उपाधि दी किंतु युद्ध के पश्चात् वब भारतीय बनता संवैधानिक सुधारों के तहत नागरिक अधिकारों की प्राप्ति का इंतजार कर रही थी तब ब्रिटिश सरकार 'नेसिडनी-रोलेट' की अध्यक्षता में एक कमेटी गठित की जिसके सुझाव पर रॉलेट एक्ट निर्मित हुआ।
- रोलेट एक्ट के तहत एक विशेष न्यायालय की स्थापना की गई। इस न्यायालय के निर्णय के विरुद्ध कहीं भी अपील नहीं की जा सकती थी।
- इस एक्ट के तहत सरकार को तलाशी लेने और किसी को भी गिरफ्तार करने का अधिकार दिया गया। इस तरह युद्ध कालीन आपातकाल के प्रावधानों को भारत में बनाए रखने की बात कही गई।
- अतः भारतीयों ने इसे 'काला कानून' कहकर इसका विरोध किया। इसी क्रम में गांधी ने फरवरी 1919 में रॉलेट एक्ट के खिलाफ देशव्यापी आंदोलन चलाने की बात कही और एक सत्याग्रह सभा की स्थापना की।
- साथ ही, होमस्ल लीग के सदस्यों से संपर्क स्थापित कर ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध संघर्ष चलाने का प्रयास किया।
- आंदोलन के दौरान राष्ट्रव्यापी हड्डाल, उपवास और प्रार्थना सभाओं का आयोजन करना तथा गिरफ्तारी देने की योजना बनाई गयी।
- सत्याग्रह आरंभ करने की तिथि 6 अप्रैल निर्धारित की गई जो समय से पहले ही आरंभ हो गया और इसने हिंसक स्प धारण कर लिया।
- इस दौरान पंजाब के अमृतसर में वैशाखी के दिन 13 अप्रैल 1919 को जालियावाला बाग में एक सार्वजनिक सभा का आयोजन किया गया। वस्तुतः पंजाब के नेता डॉ. सैफुदीन विचलु एवं सतपाल मलिक को पंजाब से निर्वासित कर दिया गया था।
- अतः सरकार के इस निर्णय का विरोध करने के लिए जालियावाला बाग में सभा बुलायी गई। ब्रिटिश अधिकारी बनरेल डायर ने इस सभा के आयोजन को सरकारी आदेश की अवहेलना मानी और बिना किसी पूर्व चेतावनी के सभा पर गोलियाँ चलायी, जिसमें सैकड़ों लोग मारे गए।
- इस हत्याकांड के विरोध में रविन्द्र नाथ टेंगोर ने सरकार द्वारा दी गई 'नाइटहुड' की उपाधि त्याग दी तथा शंकर नायर ने वायसराय की कार्यकारिणी परिषद् से त्याग पत्र दे दिया। अनेक स्थानों पर हिंसा हुई। अतः 18 अप्रैल 1912 को गांधी ने सत्याग्रह समाप्त घोषित किया।

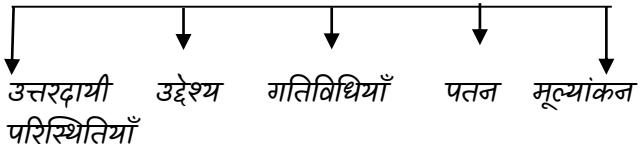
प्रश्न- निम्न घटनाओं पर विचार करें तथा निम्न में से सही उत्तर का कालानुक्रमिक चयन करें -

- नॉबवान भारत सभा का निर्माण
- स्वराजिस्ट दल का निर्माण
- दांडी मार्च
- जालियावाला बाग त्रासदी

- कूट :-**
- | | |
|---------------|---------------|
| A. 2, 1, 4, 3 | B. 2, 4, 3, 1 |
| B. 4, 2, 1, 3 | D. 4, 3, 2, 1 |

उत्तर - C

खिलाफत आंदोलन (1920)



उत्तरदायी परिस्थितियाँ :-

- तुर्की का खलीफा अध्यात्मिक मुस्लिम विश्व का गुरु माना जाता था और भारतीय मुसलमान भी भावनात्मक स्प से इससे लुड़ते थे। अतः वब ब्रिटिश सरकार द्वारा खलीफा का अपमान करने की बात सामने आई तब भारतीय मुसलमान भी ब्रिटिश सरकार का विरोध करने लगे।
- प्रथम विश्व युद्ध में तुर्की इंग्लैण्ड के विरुद्ध था किंतु ब्रिटिश सरकार ने मुसलमानों का समर्थन लेने के लिए यह आश्वासन दिया था कि तुर्की सुल्तान का सम्मान बनाए रखा जाएगा।
- किंतु ब्रिटिश सरकार ने 'सेवर्स की संधि' के माध्यम से इस आश्वासन को भग कर तुर्की साम्राज्य के विभाजन की योजना बनायी। फलतः मुस्लिम बनमत असंतुष्ट हुआ। इसी क्रम में खिलाफत आंदोलन शुरू हुआ।

1916 के लखनऊ अधिकारेशन :-

- (कांग्रेस अध्यक्ष- अंबिका चरण मन्दूमदार) हिंदू-मुस्लिम एकता के क्रम में कांग्रेस ने पृथक निर्वाचन प्रणाली को स्वीकार कर लिया।
- अतः गांधी ने हिंदू-मुस्लिम एकता के अगले कदम के स्प में खिलाफत आंदोलन को देखा। इसी क्रम में कांग्रेस को भी ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध असहयोग आंदोलन चलाने के लिए तैयार किया।

उद्देश्य - खिलाफत आंदोलन का उद्देश्य तुर्की खलीफा के सम्मान को स्थापित करना था। यद्यपि खिलाफत आंदोलन भारतीय राजनीति प्रत्यक्ष स्प से नहीं लुड़ा था किंतु फिर भी राष्ट्रीय आंदोलन में इसको भूमिका दिखाई पड़ती है।

गतिविधियाँ -

- 1919 में अली बंधुओं (मो० अली बौहर एवं शॉकत अली) तथा हकीम अजमल खाँ एवं माँलाना आबाद के नेतृत्व में खिलाफत कमेटी का गठन हुआ, जिसका उद्देश्य ब्रिटेन पर दबाव डालकर तुर्की के प्रति किए जाने वाले उसके व्यवहार को बढ़ाना था।

मुख्य परीक्षा

1. राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करने हेतु राज्य पुनर्गठन आयोग द्वारा किए गए सुझाव क्या थे?

गत परीक्षाओं में आये हुए प्रश्न

1. भारतीय वैदिक दर्शन की परंपरागत 6 शाखाओं में से किन्हीं चार का नामोल्लेख कीजिए।
2. भारत छोड़ आंदोलन में अस्त्रण आसफ अली की भूमिका पर प्रकाश डालिए।
3. लियोनार्डो द विंची ने अपना प्रसिद्ध 'द लास्ट सपर' कहाँ पर चित्रित किया था?
4. प्राचीन भारत के किन तीन ग्रंथों को प्रस्थान त्रयी कहा जाता हैं?
5. 'अर्बुन की तपस्या' प्रतिमा का संक्षिप्त विवरण दीजिए।
6. बौद्ध धर्म तथा लैन धर्म के अलावा भारत के किन्हीं दो अन्यीश्वरवादी धार्मिक संप्रदाय के नाम लिखिए।
7. सीमांत गांधी के स्प में किसे लाना जाता है? उन्होंने किस दल का गठन किया?
8. आर्य समाज और रामकृष्ण मिशन के धार्मिक शिक्षाओं में आधारभूत अंतर क्या हैं?
9. 1857 की क्रांति के समय बिहार में कुंवर सिंह की गतिविधियों पर प्रकाश डालिए?
10. राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करने हेतु राज्य पुनर्गठन आयोग द्वारा किए गए सुझाव क्या थे?
11. मध्यकालीन भारत में निर्गुण भक्ति की समृद्ध परंपरा थी, स्पष्ट कीजिए।
12. मुगल स्थापत्य काल में शाहजहां के योगदान की विवेचना कीजिए।
13. भारतीय परंपरा में क्रृष्ण की अवधारणा पर प्रकाश डालिए।
14. भारत में थियोसोफिकल सोसायटी की विचारधारा के विकास में थियोसोफिष्ट के विचारों की संक्षेप में विवेचना कीजिए।
15. बीसवीं शताब्दी में भारतीय क्रांतिकारी स्वतंत्रता आंदोलन के विकास की स्फरणों प्रस्तुत कीजिए।
16. महात्मा गांधी के आगमन ने भारतीय आंदोलन को किस प्रकार एक जन आंदोलन बना दिया?
17. भारतीय लागरण में स्वामी विवेकानंद का विशिष्ट योगदान क्या था?
18. प्रबोधन युग ने यूरोप के इतिहास की धारा को किस प्रकार प्रभावित किया?
19. प्राचीन भारतीय वैज्ञानिक साहित्य पर निबंध लिखिए।
20. भारत के विभाजन के लिए उत्तरदायी कारणों की विवेचना कीजिए।

आधुनिक विधि का इतिहास

अध्याय - 1

पुनर्जागरण व धर्म सुधार

पुनर्जागरण (Renaissance in Europe) का शास्त्रिक अर्थ होता है, "फिर से लागना"। चौंदहवीं और सोलहवीं शताब्दी के बीच यूरोप में जो सांस्कृतिक प्रगति हुई उसे ही "पुनर्जागरण" कहा जाता है।

चौंदहवीं शताब्दी से सत्रहवीं शताब्दी तक यूरोप में सांस्कृतिक क्षेत्र में जो आश्र्यजनक उन्नति हुई, उसे 'पुनर्जागरण' के नाम से पुकारा जाता है।

कथन

- **पं. लगाहरलाल नेहरू** का कथन है कि, "पुनर्जागरण का अर्थ विद्या का पुनर्जन्म तथा कला, विज्ञान और साहित्य तथा यूरोपीय भाषाओं का विकास है।"
- **इतिहासकार स्वेन** का कथन है कि, "पुनर्जागरण से ऐसे सामूहिक शब्द का बोध होता है जिसमें मध्यकालीन समाप्ति तथा आधुनिक काल के प्रारम्भ तक के बौद्धिक परिवर्तनों का समावेश होता है।"
- **प्रो. त्यूकस** का कथन है कि, "चौंदहवीं से सत्रहवीं शताब्दी के बीच में यूरोप में होने वाले महत्वपूर्ण सांस्कृतिक परिवर्तनों को 'पुनर्जागरण' कहते हैं।"
- **इतिहासकार डेविस** के अनुसार, "पुनर्जागरण शब्द मानव के स्वतंत्रता प्रिय, साहसी विचारों को जो मध्य युग में धर्माधिकारियों द्वारा लकड़े व बन्दी बना दिये गये थे, व्यक्त करता है।"
- **सीमोण्ड** के अनुसार, "पुनर्जागरण एक ऐसा आंदोलन है, जिसके फलस्वरूप पश्चिम के राष्ट्र मध्य युग से निकल कर वर्तमान युग के विचार तथा जीवन की पद्धतियों को ग्रहण करने लगे हैं।"
- **फिशर** का कथन है कि, "सर्वप्रथम इटली ने नगरों में प्राचीन यूनानी एवं रोमन कला, साहित्य का पुनः सृजन, मानववादी आंदोलन का प्रारम्भ, स्थापत्य कला एवं चित्रकला का नया स्वरूप, व्यक्तित्व एवं व्यक्तिवादी सिद्धांतों का विकास, जीवन दृष्टिकोण, वैज्ञानिक तथा ऐतिहासिक आलोचना, छापेखाने का आविष्कार, दर्शन शास्त्र एवं धर्मशास्त्र का नया स्वरूप तथा विवेचन इत्यादि तत्त्वों तथा विशेषताओं को सामूहिक स्प से 'पुनर्जागरण' कहते हैं।"

पुनर्जागरण की प्रमुख विशेषताएँ

1. **स्वतंत्र चिंतन को प्रोत्साहन-** पुनर्जागरण ने स्वतंत्र चिंतन की विचारधारा को प्रोत्साहन दिया। अब मनुष्य परम्परागत विचारों और मान्यताओं को तर्क की कस्तूरी पर कसने लगा। अब मनुष्य में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का उदय हुआ।
2. **व्यक्तित्व का विकास-** पुनर्जागरण के परिणामस्वरूप मनुष्य को प्राचीन संदियों, अंधविद्वासों एवं धार्मिक

पाखण्डों से मुक्ति मिली। इसके फलस्वरूप मनुष्य के व्यक्तित्व का स्वतंत्र स्प से विकास हुआ।

3. **मानवबादी विचारधारा का विकास-** पुनर्जागरण ने मानवबादी विचारधारा का प्रसार किया। अब मनुष्य को यह प्रेरणा मिली की उसे परलोक की चिन्ता छोड़कर इस जीवन को आनन्द से बिताना चाहिए। धर्म एवं मोक्ष के स्थान पर मानव-जीवन को सुखी एवं समृद्ध बनाना चाहिए।
4. **देशी भाषाओं का विकास-** पुनर्जागरण के परिणामस्वरूप देशी भाषाओं का अत्यधिक विकास हुआ। अब जनसाधारण की भाषाओं में ग्रंथ लिखे गए बिसके फलस्वरूप देशी भाषाओं का बहुत अधिक विकास हुआ।
5. **चित्रकला के क्षेत्र में उन्नति-** पुनर्जागरण के परिणामस्वरूप चित्रकला के क्षेत्र में अत्यधिक उन्नति हुई।
6. **वैज्ञानिक विचारधारा का विकास-** पुनर्जागरण के कारण वैज्ञानिक विचारधारा का भी विकास हुआ। अब सभी विषयों को तक एवं विज्ञान की कस्टोटी पर कस्ता जाने लगा।

पुनर्जागरण के प्रमुख कारण निम्नलिखित थे-

1. धर्म-युद्ध-

- धर्मयुद्ध (कूसेड)-ईसाई धर्म के पवित्र तीर्थ स्थान वेस्सलम के अधिकार को लेकर ईसाइयों और मुसलमानों (सेल्जुक तुर्क) के बीच लड़े गये युद्ध इतिहास में 'धर्मयुद्धों' के नाम से विख्यात हैं। ये युद्ध लगभग दो सदियों तक चलते रहे। इन धर्मयुद्धों के परिणामस्वरूप यूरोपवासी पूर्वी रोमन साम्राज्य (जो इन दिनों में बाइबेटाइन साम्राज्य के नाम से प्रसिद्ध था) तथा पूर्वी देशों के संपर्क में आये।
- इस समय में वहाँ यूरोप अज्ञान एवं अद्यकार में झब्बा हुआ था, पूर्वी देश ज्ञान के प्रकाश से आलोकित थे।
- पूर्वी देशों में अरब लोगों ने यूनान तथा भारतीय सभ्यताओं के संपर्क से अपनी एक नई समृद्ध सभ्यता का विकास कर लिया था। इस नवीन सभ्यता के संपर्क में आजे पर यूरोपवासियों ने अनेक वस्तुएं देखी तथा उन्हें बनाने की पद्धति भी सीखी।
- इससे पहले वे लोग अरबों से कुतुबनुमा, वस्त्र बनाने की विधि, कागज और छापाखाने की जानकारी प्राप्त कर चुके थे।
- इन धर्म-युद्धों के कारण यूरोपवासियों को पूर्वी देशों की तर्क-शक्ति, प्रयोग पद्धति तथा वैज्ञानिक खोजों की पर्याप्त जानकारी प्राप्त हुई। उन्हें प्राचीन यूनानी तथा रोमन विद्वानों की पुस्तकें पढ़ने का अवसर मिला। बिससे उन लोगों के ज्ञान-विज्ञान में वृद्धि हुई।
- धर्म-युद्धों के कारण यूरोप के पूर्वी देशों से व्यापारिक संबंध स्थापित हुए। यूरोप के अनेक साहसी लोगों ने पूर्वी देशों की यात्राएँ की तथा अपनी यात्राओं के विवरण लिखे, जिन्हें पढ़ने से यूरोपवासियों के संकीर्ण विचार समाप्त हुए तथा उनके ज्ञान-विज्ञान में वृद्धि हुई।
- धर्मयुद्धों के परिणामस्वरूप यूरोपवासियों को नवीन मार्गों की जानकारी मिली और यूरोप के कई साहसिक लोग पूर्वी

देशों की यात्रा के लिए चल पड़े। उनमें से कुछ ने पूर्वी देशों की यात्राओं के दिलचस्प वर्णन लिखे, जिन्हें पढ़कर यूरोपवासियों की कूप-मङ्गूस दूर हुई।

- मध्ययुग में लोग अपने सर्वोच्च धर्माधिकारी पोप को ईश्वर का प्रतिनिधि मान ले लगे थे। परन्तु बब धर्मयुद्धों में पोप की सम्पूर्ण शुभकामनाओं एवं आशीर्वाद के बाद भी ईसाइयों की परावय हुई तो लाखों लोगों की धार्मिक आस्था डगमगा गई और वे सोचने लगे की पोप भी हमारी तरह एक साधारण मनुष्य मात्र हैं।

2. पूर्व से संपर्क-

पूर्वी देशों के संपर्क में आजे से यूरोपवासी अत्यधिक प्रभावित हुए। अरब लोग स्वतंत्र स्प से चिंतन करते थे। उन्हें अरस्तू प्लेटो आदि की पुस्तकों का भी ज्ञान था। इस प्रकार अरब लोगों ने यूरोपियनों का ध्यान यूनानी दर्शन, ज्ञान-विज्ञान आदि की ओर आकर्षित किया। यूरोपियन लोगों ने अरबों तथा चीन से कुतुबनुमा, बास्क, कागज, छापेखाने आदि की जानकारी प्राप्त की। इस प्रकार पूर्वी देशों के संपर्क में आजे से यूरोपवासियों में स्वतंत्र चिंतन, वैज्ञानिक दृष्टिकोण आदि की भावनाएँ उत्पन्न हुई।

3. मंगोलों का योगदान-

- 13वीं शताब्दी में मंगोल नेता कुबलई खाँ ने एक विशाल मंगोल साम्राज्य स्थापित किया। कुबलई खाँ ने अपने दरबार में अनेक विद्वानों, साहित्यकारों, धर्म प्रचारकों, राजदूतों आदि को संरक्षण दे रखा था। इटली का प्रसिद्ध यात्री मार्कोपोलो भी उसके दरबार में पहुँचा था। चीन से लौटकर उसने अपनी यात्रा का रोचक वर्णन लिखा। इस वर्णन से यूरोपवासियों को नये-नये देशों की खोज करने तथा अपनी संस्कृति को विकसित करने की प्रेरणा मिली।
- प्रसिद्ध यात्री कोलम्बस भी कुबलई खाँ के दरबार में पहुँचा। उसने कुबलई खाँ से प्रभावित होकर समृद्धी यात्रा के लिए प्रस्थान किया। अरबों तथा मंगोलों के संपर्क से यूरोपवासियों को छापाखाना, कुतुबनुमा, बास्क, कागज आदि की जानकारी हुई। इन चीजों की जानकारी ने यूरोपवासियों के दृष्टिकोण में क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया।
- यूरोप के बहुत से देशों विशेषकर स्पेन, सिसिली और सार्डिनिया में अरबों के बस वाजे से पूर्व यूरोपवासियों को बहुत सी बातें सीखने को मिली। अरब लोग स्वतंत्र चिंतन के समर्थक थे और उन्हें यूनान के प्रसिद्ध दर्शनिकों प्लेटो तथा अरस्तू की रचनाओं से विशेष लगाव था।
- ये दोनों विद्वान् स्वतंत्र विचारक थे और उनकी रचनाओं में धर्म का कोई संबंध न होता था। अरबों के संपर्क से यूरोपवासियों का ध्यान भी प्लेटो तथा अरस्तू की ओर आकर्षित हुआ। तेहवीनी सदी के मध्य में कुबलई खाँ ने एक विशाल मंगोल साम्राज्य स्थापित किया और उसने अपने ही तरीके से यूरोप और एशिया को एक-दूसरे से परिचित कराने का प्रयास किया। उसके दरबार में वहाँ पोप के दूत तथा यूरोपीय देशों के व्यापारी एवं दस्तकार

रहते थे, वहीं भारत तथा अन्य एशियाई देशों के विद्वान् भी रहते थे।

4. नगरों का विकास-

व्यापार के विकास के कारण यूरोप में नगरों का विकास हुआ। व्यापारी लोग नगरों में रहने लगे। नगरों के विकास के कारण व्यापारी लोग धनवान बनते चले गये। इन्होंने अपने रहने के निवास स्थानों को सुन्दर चित्रों एवं मूर्तियों से सुसज्जित करवाया। नगरों के निवासी स्वतंत्र वातावरण को पसन्द करते थे तथा कठोर नियमों के बन्धनों में बँधने के लिए तैयार नहीं थे। ये लोग मध्ययुगीन स्थियों तथा अंधविद्वासों को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थे। इन लोगों की प्राचीन यूनानी तथा रोमन साहित्य एवं कला में रुचि थी। अतः नगरों के विकास के कारण स्वतंत्र चिंतन की प्रवृत्ति का विकास हुआ तथा लोगों में प्राचीन यूनानी एवं रोमन साहित्य तथा कला के प्रति रुचि भी बढ़ी। इससे पुनर्जागरण को प्रोत्साहन मिला।

5. व्यापार का विकास-

धर्म-युद्धों के कारण यूरोप के पूर्वी देशों के साथ व्यापारिक संबंध स्थापित हुए। इससे व्यापार की अत्यधिक उन्नति हुई। उस समय बेनिस, मिलान, फ्लोरेंस आदि व्यापार के प्रसिद्ध केन्द्र बन गए। इस व्यापारिक संपर्क से यूरोपवासियों के ज्ञान में वृद्धि हुई। व्यापारिक विकास के कारण अनेक नगरों का उदय एवं विकास भी हुआ। नगरों का वातावरण स्वतंत्रता का था जिससे व्यापारियों में स्वतंत्र चिंतन की प्रवृत्ति उत्पन्न हुई। इसके अतिरिक्त धन की प्रचुरता के कारण व्यापारियों को अध्ययन करने का अवसर मिला। धनी व्यापारियों को बगदाद, काहिरा आदि से खरीदी हुई पुस्तकें पढ़ने का अवसर मिला। जिससे उनके ज्ञान-विज्ञान में वृद्धि हुई। व्यापारी लोग साहित्यकारों, लेखकों, कवियों, विद्वानों, कलाकारों आदि को उदारतापूर्वक आर्थिक सहायता देने लगे। इसके फलस्वरूप साहित्य, कला, विज्ञान आदि क्षेत्रों में महत्वपूर्ण उन्नति हुई।

6. सामन्तों की शक्ति का क्षीण होना-

मध्य युग में सामन्तों का अत्यधिक प्रभाव था। सामन्त अपने क्षेत्रों में शासकों की भाँति शासन करते थे। वे सामन्य बनता से अनेक प्रकार के कर बसूल करते थे। ये लोग युद्धों एवं लूटमार में भी लिप्त रहते थे। सामन्तों के कारण गृह-कलह, अंशाति एवं अरावकता व्याप्त थी। सामन्त और चर्च के धर्माधिकारी दोनों बनता का शोषण करते थे। परन्तु 14वीं शताब्दी के अन्त तक सामन्तों की शक्ति अत्यन्त क्षीण हो चुकी थी। सामन्तवाद के पतन के कारण यूरोप में सुदृढ़ एवं राष्ट्रीय राष्ट्रों की स्थापना हुई तथा अंशाति एवं अरावकता का वातावरण समाप्त हुआ। अब बनता के लिए स्वतंत्र स्प से चिंतन करना सुगम हो गया। परिणामस्वरूप साहित्य, कला, विज्ञान आदि की उन्नति के लिए अनुकूल वातावरण बन गया।

7. शिक्षा का विकास-

मध्य युग के अन्त में शिक्षा की काफी उन्नति हुई। यूरोप के प्रमुख नगरों में विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई। इन विश्वविद्यालयों में विद्यार्थी किसी भी विषय का अध्ययन कर सकते थे, क्योंकि ये धार्मिक नियंत्रण से मुक्त थे। शिक्षा के विकास के कारण मनुष्य में स्वतंत्र चिंतन, तार्किक दृष्टिकोण और वैज्ञानिक चेतना का विकास हुआ। अब उसे धार्मिक पाखण्डों, स्थियों और अंधविद्वासों में कोई रुचि नहीं रही तथा वह प्रत्येक विषय पर स्वतंत्रतापूर्वक विचार करने लगा।

8. भ्रांगोलिक खोलों-

भ्रांगोलिक खोलों ने भी पुनर्जागरण के विकास में योगदान दिया। मार्कोपोलो, कोलम्बस, वास्को-डी-गामा आदि साहसी यात्रियों ने भारत, चीन एवं अरब देशों के लल-मार्गों की खोल की। भ्रांगोलिक खोलों के कारण यूरोपीय व्यापार की उन्नति हुई। अब यूरोपवासी अपने व्यापार एवं धर्म प्रचार के लिए विश्व के विभिन्न भागों में पहुँचने लगे। जब ये लोग दूसरे देशों की सभ्यता के संपर्क में आए तो उनके ज्ञान में वृद्धि और उनकी चिंतन शक्ति का विकास हुआ। अब उनकी संकीर्णता समाप्त होने लगी और उनका दृष्टिकोण व्यापक हुआ। उनकी वेशभूषा, खान-पान, रहन-सहन के ढंग में परिवर्तन हुआ। इस प्रकार भ्रांगोलिक खोलों ने पुनर्जागरण के लिए अनुकूल वातावरण तैयार कर दिया।

9. कागज तथा छापेखाना-

कागज एवं छापेखाने के आविष्कार ने भी पुनर्जागरण के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। कागज और छापेखाने का आविष्कार चीन ने किया। यूरोपवासियों को कागज और छापेखाने की लानकारी अरबों से प्राप्त हुई। 1450 में छापेखाने का आविष्कार रम्नवासी गुटनबर्ग ने किया था। शीघ्र ही यूरोप के प्रमुख नगरों में छापेखाने की स्थापना हो गई। छापेखाने के आविष्कार के कारण पुस्तकें सस्ते मूल्यों पर मिलने लगी। अब साधारण व्यक्ति भी पुस्तकें खरीद सकता था तथा पढ़ सकता था। पुस्तकों, समाचार पत्रों आदि के माध्यम से लोग बड़े लाभान्वित हुए। उनके अंधविद्वास धीर-धीरे कम होने लगे और उनमें स्वतंत्र चिंतन की प्रवृत्ति विकसित हुई।

10. विज्ञान के क्षेत्र में उन्नति-

मध्ययुग के उत्तरार्द्ध में विज्ञान के क्षेत्र में भी उन्नति हुई। इंग्लैण्ड के प्रसिद्ध वैज्ञानिक रोलर बैंकन ने तर्क और प्रयोग पर बल दिया। उसका कहना था कि जो बात तर्क और विज्ञान की कसाँटी पर खरी उतरे, केवल उसे ही स्वीकार करना चाहिए। कॉपरनिकस, बूनो, गैलीलियो आदि प्रसिद्ध वैज्ञानिकों ने व्योतिष एवं खगोल के क्षेत्र में अनेक नवीन आविष्कार कर प्राचीन मान्यताओं का खण्डन किया। इन वैज्ञानिक खोलों के कारण मनुष्य में वैज्ञानिक दृष्टिकोण उत्पन्न हुआ और उसका विश्वास प्राचीन स्थियों एवं अंधविद्वासों से हटने लगा। अब यूरोपवासियों की तर्क, विज्ञान और प्रयोग में रुचि बढ़ने लगी।

4. व्यक्ति की महत्ता का विकास-

धर्मसुधार आंदोलन ने ईश्वर के साथ प्रत्येक व्यक्ति के सीधे संबंध को स्थापित कर व्यक्ति की स्वतंत्र अस्मिता के विकास में योगदान दिया। प्रत्येक व्यक्ति को बाइबिल पढ़कर स्वयं उसकी व्याख्या करने पर बल दिया। व्यक्ति पर धर्म का प्रभाव कम होने से व्यक्ति को महत्त्व प्राप्त हुआ। अब उसके चिंतन के आयाम चारों दिशाओं में अपने पैर पसार सकते थे। धर्म का बंधन ढीला पड़ने से मानव का व्यक्तित्व निखरने लगा।

5. शासकों की शक्ति का विकास-

धर्मसुधार आंदोलन के परिणामस्वरूप शासकों की शक्ति बढ़ी। स्कॉडिनेविया, लर्मनी, इंग्लैण्ड, स्विटजरलैण्ड, हॉलैण्ड आदि राज्यों में शासकों ने धार्मिक मामलों में नियंत्रण का अधिकार प्राप्त करके और उसी के साथ चर्च की बमीनों को अधिकृत करके अपनी शक्ति एवं सम्पत्ति दोनों में वृद्धि की। कैथोलिक देशों में भी राजाओं ने पोप की कठिनाइयों का लाभ उठाते हुए बहुत सी सुविधाएँ प्राप्त कर ली, जिसके फलस्वरूप चर्च के मामले में उन्हें पहले से अधिक शक्ति प्राप्त हो गयी।

6. गणित्य-व्यापार को प्रोत्साहन-

- पुनर्जागरण युग से सामन्तवादी व्यवस्था को समाप्ति और व्यापार की प्रगति से एक समृद्ध मध्यम वर्ग का उदय हुआ जिसकी रुचि भौतिक स्प से ऐश्वर्यपूर्ण वीवन व्यतीत करने में भी लेकिन परम्परागत ईसाई धर्म में धन संचय को हेय दृष्टि से देखा जाता था तथा चर्च सूद और अनुचित मुनाफे का विरोधी था इसलिए धर्मसुधार आंदोलन की प्रवृत्ति इस वर्ग के लिए रुचिकर थी। धर्मसुधारकों द्वारा सूद एवं मुनाफे को उचित बताने से इस वर्ग को प्रोत्साहन मिला।
- कुछ विद्वान यह स्वीकार करते हैं कि प्रोटेस्टेंटों ने और विशेष स्प से कॉल्विनवादियों ने व्याव लेने की तरफ उदार दृष्टिकोण अपनाया और मितव्यता, कठोर श्रम आदि पर जोर दिया जो कि व्यवसाय में वृद्धि एवं पूँजीवाद के विकास के लिए आवश्यक गुण थे। फिर भी पूँजीवाद के विकास में सुधारवादी आंदोलन की भूमिका का सही मूल्यांकन करना कठिन है क्योंकि इसका उदय तो सुधारवादी आंदोलन के पूर्व ही कैथोलिक इटली में हो चुका था।
- प्रोटेस्टेंट देशों में पूँजीवाद का उदय अवश्य ही बाद में हुआ था। इसके अतिरिक्त कैथोलिक चर्च के कमबोर हो जाने से चर्च और मठों की भूमि एवं सम्पत्ति में मध्यम वर्ग को सबसे ज्यादा लाभ मिला। इस मध्यम वर्ग ने व्यापार एवं गणित्य को बढ़ावा दिया।

7. राष्ट्रीय भाषा और साहित्य का प्रचार-प्रसार-

धर्मसुधार आंदोलन का एक परिणाम यह भी हुआ कि लोकभाषाओं एवं साहित्य का विकास हुआ। लूथर ने स्वयं ही बाइबिल का लर्मन में अनुवाद किया। धर्म-संबंधी अनेक पर्चे तथा लेख, उसने अपनी मातृभाषा में लिखे एवं प्रकाशित कराये। अन्य देशों में भी वहाँ जये मत को प्रधानता मिली वहाँ की लोकभाषा में धर्म संबंधी साहित्य अनूदित एवं

प्रसारित हुआ। अब तक लैटिन को जो प्रतिष्ठा प्राप्त थी वह अब लोकभाषाओं को भी मिलने लगी। नवीन धर्मप्रचारकों ने भी अपने-अपने क्षेत्रों में क्षेत्रीय भाषाओं में शिक्षा का प्रसार कार्य किया जिसके परिणामस्वरूप लोगों में अपनी मातृभाषा के प्रति श्रद्धा की भावना का विकास हुआ।

धर्म सुधार-विरोधी आंदोलन / कैथोलिक धर्म सुधार / प्रतिवादी धर्म सुधार आंदोलन / counter Reform

- यूरोप में धर्म सुधार आंदोलन के कारण नवीन प्रोटेस्टेंट धर्म के प्रसार से चित्त होकर कैथोलिक धर्म के अनुयायियों ने कैथोलिक चर्च व पोपशाही की शक्ति व अधिकारों को सुरक्षित करने और उनकी सत्ता को पुनः सुदृढ़ बनाने के लिए कैथोलिक चर्च और पोपशाही में अनके सुधार किये। यह सुधार आंदोलन, कैथोलिकों की दृष्टि से उनके पुनरुत्थान का आंदोलन है और प्रोटेस्टेंट विरोधी होने से इसे धर्म-सुधार-विरोधी आंदोलन (Counter-Reformation), या प्रतिवादी अथवा प्रतिवादात्मक धर्म-सुधार आंदोलन कहा गया। यह आंदोलन सोलहवीं सदी के मध्य से प्रारंभ हुआ और सत्रहवीं शताब्दी के मध्य तक चला। (द्रेन्ट काउंसिल (1545-1563) से आरम्भ होकर तीसवर्षीय युद्ध की समाप्ति तक (1648))
- इस धर्मसुधार-विरोधी आंदोलन का उद्देश्य कैथोलिक चर्च में पवित्रता और ऊँचे आदर्शों को स्थापित करना था, चर्च और पोपशाही में व्याप्त दोषों को दूर कर उसके स्वरूप को पवित्र बनाना था। इस युग के नये पोप वैसे पॉल तृतीय, पॉल चतुर्थ, पायस चतुर्थ, पायस पंचम आदि पूर्व पोपों की अपेक्षा अधिक सदाचारी, धर्मनिष्ठ, कर्तव्यपरायण और सुधारवादी थे। इनके प्रयासों से कैथोलिक धर्म में नवीन शक्ति, स्फूर्ति और प्रेरणा आई और कई सुधार किये गये।

प्रतिवादी धर्म सुधार आंदोलन

सोलहवीं शताब्दी के धर्म सुधार आंदोलन तथा प्रोटेस्टेंटों की सफलता ने यह स्पष्ट कर दिया कि अपने स्थायित्व के लिए रोमन कैथोलिक चर्च में भी सुधार आवश्यक है। अतः अपनी सुरक्षा की दृष्टि से कैथोलिक मतावलम्बियों ने भी सुधार आंदोलन का सूत्रपात किया जिसे प्रतिवादी या प्रतिवादात्मक धर्मसुधार आंदोलन कहा गया है। विद्वान लेखक शैंपिल ने लिखा है "प्रतिवादी धर्मसुधार आंदोलन वास्तव में कैथोलिक धर्म सुधार के लिए किये गये प्रयत्नों का नाम है।"

प्रोटेस्टेंट धर्म की बढ़ती हुई लोकप्रियता से कैथोलिक धर्म के नेताओं को अस्वयिक चिन्ता हुई। अतः पोप और उसके अनुयायियों ने प्रोटेस्टेंट धर्म की प्रगति पर अंकुश लगाने का निश्चय कर लिया। परिणामस्वरूप प्रोटेस्टेंट धर्म की प्रगति को रोकने और कैथोलिक चर्च की बुराइयों को दूर करने के लिए यह आंदोलन चलाया गया। इसके परिणामस्वरूप प्रोटेस्टेंट धर्म की प्रगति अवरुद्ध हो गई और कैथोलिक धर्म अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा को पुनः प्राप्त करने लगा।

7. प्रांस की नीति

राष्ट्रसंघ की तात्कालिक असफलता मुख्य कारण प्रांस की नीति थी। देखा जाये तो राष्ट्रसंघ का समर्थन करने में प्रांस का भी हित था, परन्तु जब इस तरह की परिस्थितियां निर्मित हुई तो उसका टृष्णिकोण उदासीन और निषेधात्मक हो गया। वास्तविकता यह थी कि उसे संघ की ओर से सुरक्षा की अधिक आशा नहीं रही। अतः उसने इटली से संधि कर ली जिससे उसे उत्तरी अफ्रीका में ऑपनिवेशिक झगड़ों तथा इटली से अपने सीमा संबंधी विवाद से मुक्ति मिल गई थी। वह इटली के साथ-साथ इंग्लैण्ड को भी नाराज करना नहीं चाहता था क्योंकि वर्मनी की ओर से उसे लो भय था इस मुकाबला करने इंग्लैण्ड की आवश्यकता थी। ऐसी वटिल स्थिति में वह इटली के विस्फू कड़ी कार्याही को रोककर उसे प्रसङ्ग करने में लगा रहा तथा उसके साथ ही प्रतिबंधों का समर्थन करने में इंग्लैण्ड का साथ देकर उसकी सङ्घावना को बनाए रखने का प्रयत्न भी करता रहा। इस प्रकार इंग्लैण्ड और प्रांस में पूर्ण सहयोग नहीं हुआ और सक्रिय विरोध के अभाव में इटली ने संघ को ऐसी चोट पहुंचाई जिससे वह बाहर नहीं निकाल सका।

द्वितीय विश्व युद्ध

द्वितीय विश्व युद्ध के कारण

- वर्साय की अपमानजनक संधि - वर्साय की संधि के समय विजयी राष्ट्रों ने दूरदर्शिता से कार्य नहीं किया, केवल प्रतिशोध की भावना से प्रेरित होकर उन्होंने वर्मनी का ढमन किया। अतः वर्मनी द्वारा अपने अपमान का प्रतिशोध लेना तो स्वाभाविक ही था। इसके अतिरिक्त मित्र राष्ट्रों की सहमति, उपेक्षा और विरोध से इस संधि के अनेक भाग भंग होते चले गये। उदाहरणार्थ, इसके पहले भाग का संशोधन वर्मनी को राष्ट्रसंघ का सदस्य बनाकर किया गया। 1935 में हिटलर ने संधि में वर्मनी की सेनाओं को सीमित रखने संबंधी धारा को तोड़ दिया, किन्तु मित्र राष्ट्रों ने इसकी उपेक्षा की। प्रादेशिक व्यवस्था संबंधी धारा को भी हिटलर ने पश्चिमी राष्ट्रों की उपेक्षा और सहमति से भंग कर दिया। राझन को सेना रहित क्षेत्र रखने संबंधी धारा का भी हिटलर ने उल्लंघन किया (1936)। मार्च, 1938 में ऑस्ट्रिया के साथ एकीकरण के निषेध की व्यवस्था को भंग किया और अन्त में जब उसने पोलिश गलियारे और डेनिग के प्रश्न पर वर्साय संधि की व्यवस्था को तोड़ना चाहा तो द्वितीय विश्व युद्ध का श्रीगणेश हो गया। वस्तुतः मित्र राष्ट्रों की परस्पर विरोधी एवं संधि को शर्तों को कठोरतापूर्वक पालन न करने की नीति के कारण वर्मनी का साहस बढ़ गया और उसने दूसरा विश्व युद्ध छेड़ने की हिम्मत की। लैंगसम के अनुसार, "1918 में अपनी भीषण हार के केवल 21 वर्ष बाद ही वर्मनी को इतिहास का सबसे बड़ा युद्ध छेड़ने में समर्थ बनाने का एक महत्वपूर्ण कारण यह था कि शांति समझाते को बनाये रखने के लिए ब्रिटेन और प्रांस ने विभिन्न नीति मार्गों का अवलम्बन किया।" इसलिए

वर्मनी द्वारा संधि की विभिन्न शर्तों के उल्लंघन को दोनों उपेक्षा करते रहे, जिससे वर्मनी की हिम्मत बढ़ गयी और उसने वर्साय संधि के अपमान का प्रतिशोध लेने में कोई संकोच नहीं किया।

2. आर्थिक मंदी का प्रभाव

युद्ध के बाद यूरोप में जो आर्थिक सुधार हुआ वह अकूबर, 1929 में शेयरों के दामों में भारी गिरावट के कारण फिर से प्रभावित हुआ। 1932 तक यूरोप का आंदोलन उत्पादन लगभग आधा रह गया और 1935 में व्यापार 58 बिलियन डॉलर (580 खरब डॉलर) से नीचे आ गया। विश्वव्यापी आर्थिक मंदी ने भयंकर बेरोज़गारी की समस्या पैदा कर दी। 1932 में बेरोज़गारों की संख्या वर्मनी में साठ लाख, ब्रिटेन में तीस लाख और अमरीका में तेरह लाख हो गयी थी। संकटग्रस्त अंतर्राष्ट्रीय राजनीति आर्थिक मंदी से प्रभावित हुए बिना न रह सकी। राष्ट्रों के बीच अस्तित्व के लिए उठी तीव्र स्पर्धा जे राष्ट्रवादी भावनाओं को और मजबूत किया। वर्मनी, इटली, जापान, स्पेन और स्मानिया की कमज़ोर राजनीतिक प्रणालियों के कारण वहाँ के उग्र दक्षिणपंथी "राष्ट्रवादी" फासीवादी नेतृत्व और विचारधाराओं को फासीवादी और सैन्यवादी शासन स्थापित करने का मौका मिला। वर्मनी के मामलों में प्रांस की दखलअंदाजी की कोशिश जे भी वर्मनी में राष्ट्रवादी भावनाओं को उभारा। वर्मनी द्वारा क्षतिपूर्ति के "हवर मॉरोटोरियम" (Hoover Moratorium) जे भी प्रांस और अमरीका के बीच कटुता को बढ़ाया। मुद्राओं के स्पर्धात्मक अवृत्त्यन और प्रतिस्पर्धात्मक राष्ट्रीय मुद्रा के उभरने जे राजनीतिक आर्थिक संकट को गहरा दिया। आश्र्य नहीं होना चाहिए कि हिटलर ने एक आत्म निर्भर राझ्य (संसद) की स्थापना के अपने कार्यक्रम के लिए जनता की सहमति आसानी से हासिल कर ली।

3. वर्मनी में नात्सीवाद का उदय

- 1920 और 1930 के दशक यूरोप के लाखों लोगों के लिए राजनीतिक अस्थिरता, आर्थिक कठिनाइयाँ, बेरोज़गारी, विश्वास के दूटने और विकटोशिया समाज के मूल्यों के विघटन के दशक थे। ऐसे लोग फासीवादी आंदोलन के विचारों और भ्रमों के प्रति आसानी से आकृष्ट हो गए। ऐसी ही परिस्थितियों में हिटलर लोगों को कष्टों से मुक्ति दिलाने वाले नेता के स्प में उभर कर सामने आए। 1932 तक, वैसा कि फ्रिंज स्टर्न का मत है, "वाइमर का पतन निश्चित हो चुका था। लेकिन हिटलर अब तक पूर्णतः सफल न हो सका था। फिर भी 1933 में घटी घटनाओं ने हिटलर को अंततः वर्मनी का चांसलर बना दिया।
- 1920 से 1928 के बीच गठबंधन की राजनीति के कारण वर्मनी में संसदीय प्रणाली बीवित रही। लेकिन 1929 की आर्थिक मंदी ने वाइमर सरकार, लो अब तक अनिश्चितता की स्थिति में लटकी हुई थी, उसके भाग्य का फैसला कर दिया। नात्सीवादी 1924 में लिनकी संख्या राझ्यस्टाग संसद में 32 थी, 1928 में घटकर 12 हो गयी थी, उन्होंने इस

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें -  (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - <https://shorturl.at/qBJI8> (74 प्रश्न, 150 में से)

RAS Pre 2023 - <https://shorturl.at/tGHRT> (96 प्रश्न, 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - <https://youtu.be/gPqDNlc6URO>

Rajasthan CET 12th Level - <https://youtu.be/oCa-CoTFu4A>

RPSC EO / RO - <https://youtu.be/b9PKjl4nSxE>

VDO PRE. - <https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s>

Patwari - <https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s>

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - <https://youtu.be/ZgzzfJyt6vI>

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्टूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये
RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 में से)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)

SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1 st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21 नवम्बर 2021 (1 st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1 st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12 th level	04 February 2023 (1 st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

Our Selected Students

Approx. 137+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	11419512037002 2	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
	Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer singh prajapati	SSC CHSL tier-T 1	2006018079	Teh.- Biramganj, Dis.- Raisen, MP
N.A	Mahender Singh	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumang arh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumang arh
N.A	Mangilal Siyag	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner

	MONU S/O KAMTA PRASAD	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
	Govinda Jangir	RAS	1231450	Hanumang arh
N.A	Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirs Road , Panchyawa la
N.A	LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR
N.A	Ramchandra Pediwal	RAS	N.A.	diegana , Nagaur

	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village-gudaram singh, teshil-sojat
N.A	OM PARKSH	RAS	N.A.	Teshil-mundwa Dis-Nagaur
N.A	Sikha Yadav	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
	Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel	Rac batalian	729141135	Dis.- Bhilwara
N.A	mukesh kumar bairwa s/o ram avtar	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUNU
N.A	Rinku	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	Rupnarayan Gurjar	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

	Jagdish Jogi	EO/RO Marks)	(84	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota	

And many others.....

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp करें - <https://wa.link/uwc5lp>

Online order करें - <https://bit.ly/3X6MGue>

Call करें - **9887809083**